स्वामी आत्माराम जी वेदांत आश्रम गोसोन्य गोंड़

# स्वर्ग

स्वामी आत्माराम जी मैमोरियल ट्रस्ट
गोसोन्य गोंड़ कश्मीर, बोड़ी जम्मू
(जम्मू व कश्मीर)

**स्वामी आत्माराम जी**

गोसोन्य गोंड़ आश्रम, कश्मीर

ॐ

# स्वर्ग

(स्वामी आत्माराम वेदांत आश्रम गोसोन्य गोंड़)

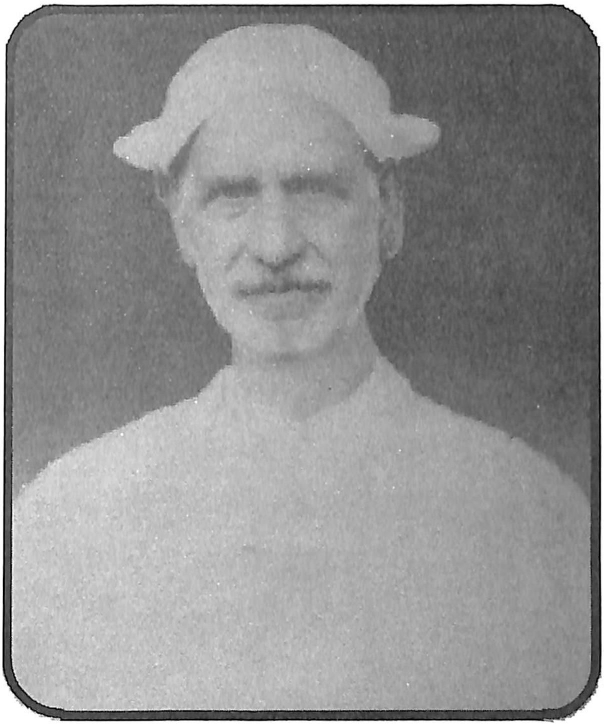

स्वामी आत्माराम मैमोरियल ट्रस्ट
गोसोन्य गोंड़ आश्रम, बोड़ी जम्मू।
(जम्मू व कश्मीर)

# स्वर्ग

## स्वामी आत्माराम वेदांत आश्रम गोसोन्य गोंड़ की कहानी महात्मा प्रेमनाथ भट्ट की जबानी

स्वामी आत्मा राम मैमोरियल ट्रस्ट
गोसोन्य गोंड़ आश्रम, बोड़ी जम्मू।
(जम्मू व कश्मीर)

# स्वर्ग

(इस पुस्तक के सारे अधिकार ट्रस्ट के नाम सुरक्षित हैं)


| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **स्वर्ग** |
| सहयोग | : | स्व महात्मा पृथ्वीनाथ जी |
| कम्प्यूटर D.T.P | : | **IILS DTP CENTER**<br>471-A, Sec-2 Vinayak Nagar,<br>Muthi, Jammu - 181205<br>**Rinku Koul # 9419136369** |
| आश्रम | : | गोसोन्य गोंड़ कश्मीर |
| शाखा | : | तुमाल बोड़ी जम्मू |
| वर्ष | : | 2014 ई० |
| मूल्य | : | ₹ 100.00 |
| लेखक | : | **श्री महाराज कृष्ण भट्ट** |
| प्रकाशक | : | स्वामी आत्माराम मैमोरियल ट्रस्ट<br>तुमाल बोड़ी जम्मू। |

पुस्तक मिलने का पता:-

स्वामी आात्माराम मैमोरियल ट्रस्ट

तुमाल बोड़ी जम्मू -180002

# अध्याय सूची


| अंक | विषय | पुष्ट |
|---|---|---|
| 1. | शांति मन्त्र | 6 |
| 2. | गायत्री मन्त्र | 7 |
| 3. | निवेदन | 8 |
| 4. | दो शब्द | 9 |
| 5. | जय गरूदेव | 12 |
| 6. | आश्रम गोसोन्य गोंड़ | 15 |
| 7. | स्वामी जगननाथ बाबा | 17 |
| 8. | स्वामी जीवन साहब | 18 |
| 9. | स्वामी गंगाराम जी | 19 |
| 10. | स्वामी मिर्जकाक जी | 21 |
| 11. | स्वामी तोतकाक जी | 23 |
| 12. | स्वामी नन्दलाल जी कौल | 27 |
| 13. | स्वामी सोनहकाक जी | 29 |
| 14. | स्वामी अत्माराम जी | 33 |
| 15. | स्वामी नन्दलाल जी (नन्दु बब) | 36 |
| 16. | स्वामी सोनहकाक जी का निर्वाण | 38 |
| 17. | स्वामी सर्वानन्द जी | 40 |
| 18. | स्वामी लक्ष्मण जी | 44 |
| 19. | आश्रम का विस्तार | 46 |
| 20. | करिशमे और अनुग्रह | 48 |

| | | |
|---|---|---|
| 21. | स्वामी नाथ जी | 50 |
| 22. | महात्मा शंम्भूनाथ जी | 52 |
| 23. | महात्मा प्रेमनाथ जी भट्ट | 54 |
| 24. | स्वामी आत्माराम जी का निर्वाण | 56 |
| 25. | महात्मा पृथ्वीनाथ जी | 57 |
| 26. | स्वामी रामानन्द जी | 59 |
| 27. | स्वामी सर्वानन्द जी का निर्वाण | 60 |
| 28. | महात्मा प्रमेनाथ जी पंड़ित | 64 |
| 29. | स्वामी नाथ जी का निर्वाण | 65 |
| 30. | आश्रम का संचालन | 67 |
| 31. | कश्मीर से विस्थापन | 68 |
| 32. | बोड़ी जम्मू आश्रम | 69 |
| 33. | स्वामी अत्माराम मैमोरियल ट्रस्ट | 71 |
| 34. | भविष्य की कल्पना | 74 |
| 35. | महात्मा पृथ्वी नाथ जी का निर्वाण | 75 |
| 36. | ट्रस्ट के निर्माण कमीटी | 77 |
| 37. | ट्रस्ट के सदस्य | 78 |
| 38. | ऐकज़िक्यूटिव बाडी | 79 |
| 39. | ऐकज़िक्यूटिव सदस्य | 79 |
| 40. | ओंम शांति | 80 |
| 41. | नोट | 80 |

# शांति मन्त्र

| | |
|---|---|
| ॐ नमः शम्भवाय च | मयो भवाय च |
| ॐ नमः शंकराय च | मयस्कराय च |
| ॐ नमः शिवाय च | शिवतराय च |

# गायत्री मन्त्र

## "ॐ भूर्भुव : स्व: तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात।"

अर्थ:-

में उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ के रूप में निहित है। जो शक्ति तीनों लोको में व्याप्त है। जिस को वेदों ने तत् नामसे पुकारा है। जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, तथा नाश करती है। जो वरन करने योग्य है। जो तेजो रूप है और ऐश्वर्य प्रधान करने वाली है। मैं इस महान शक्ति का चिन्तन करता हूँ। वह शक्ति मेरी बुद्धि को सत कर्मो में प्रेरित करे।

**निवेदन :-**

हर हिन्दू जिस ने यज्ञोपवीत धारण किया हो जनऊ अपने गले में सारी उम्र ड़ाले रखें और प्रति दिन प्रात: काल जनऊ धोते समय तीन बार गायत्री मंत्र का उच्चारण करे।

# निवेदन

नमस्कार!

गोसोन्य गोंड के श्री स्वामी आत्माराम जी किसी परिचय के मोहताज नहीं। उन के आत्म ज्ञान और दिव्य शक्ति की चमक कुछ और थी। यहां की गरु-शिष्य परम्परा पहले से चली आ रही है। साधु का जीवन एक सागर के समान होता है। वही उस सागर को पार कर सकता है जिस के मन में आत्म विशवास और भगवान पर अडिग श्रद्धा हो! स्वामी सर्वानन्द जी भी उच्च कोटि के साधु थे, अपनी बात के बड़े पक्के थे। महात्मा नाथ जी सीधे साधे शांत सुभाव वाले थे। उनके रहने से आश्रम स्वर्ग के समान प्रतीत होता। हर एक को इस अस्थापन पर आस्था और श्रद्धा है। मैं निवेदन करता हूं विशेषत: कश्मीरी पण्डित समाज जोकि बिखर गया है आज पुन: एकत्र होकर अपने रीति रिवाजों और त्योहारों को मनाते रहे एवं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार प्रदान करें। में प्रार्थना करता हूँ कि गरु की कृपा हम पर सदैव बनी रहे और हमारा मार्गदर्शन करें।

**महात्मा पृथ्वीनाथ जी**

# दो शब्द

स्वामी आत्माराम जी वेदांत आश्रम गोसोन्य गोंड़ कश्मीर के उन प्रसिद्ध अध्यात्मिक केन्द्रों में से एक है, जो ज्ञान और योग के लिए समस्त वादी और उससे बाहर भी जाने जाते हैं। इस आश्रम की संत परम्परा बहुत प्राचीन है। यहाँ के पहले संत जिनका हमें ज्ञान है स्वामी जगन्ननाथ बाबा थे। स्वामी मिर्ज़ुकाक जी जो अफगान शासन के दोरान एक प्रख्यात संत हुये हैं उनके साथ इनके सीधे संबंध थे। यह परम्परा हिन्दू शासन के संत-ऋषि परम्परा से सम्बन्धित प्रतीत होती है, जिसका पूर्ण ज्ञान अब नष्ट हो चुका है।

मध्यकालीन कश्मीर में इस्लाम के आने से जो अशान्ति हुई, उस में भूत पूर्व कई आश्रम, तपोवन और स्यद्ध पीठ तबाह कर दिए गऐ। कश्मीर के मूलभूत आधार संबंधी, काशमीरी पंड़ितों के धर्म-स्थलों अस्थापनों, संतों, ऋषियों के विषय में बहुत कम प्रकाशित हुआ हैं। मोहमद् अजीम देदमरी के वाकियात कश्मीर नामी फारसी इतिहास को देखा जाऐ, तो यह अवधि मध्यकाल के कश्मीर का संक्षति इतिहास है। अठारवीं शताब्दी के मध्य-भाग में लिख़ा गया इस इतिहास के अंतिम अध्याय में अमरनाथ जी गुफा और इसकी यात्रा का वर्णन करते हुऐ लिखा है कि हिन्दूस्तान भर से साधु, संत और जोगी इस पवित्र यात्रा में सम्मिलित होते हैं।

परन्तू 300 पन्नों पर लिखे इस इतिहास में जहाँ सूफियों, शैखों, मदरसों, मौलवियों, यहाँ तक कि फारसी कवियों का वर्णन है

वहाँ कश्मीर के किसी भी साधु या संत का कहीं नाममात्र उल्लेख तक नहीं है। प्रथम ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि ऋषियों की इस भूमि पर उस समय में कोई प्रसिद्ध साधु संत नहीं था। दूसरा हमारे पास कई सारे संतों, साधुओं और संस्कृत विद्वानों एवं कवियों की सूचना है। कल्हण की राजतरंगिणी के दूसरे-तीसरे और चौथे अंश एवं एक और राजतरंगिणी जो अकबर के अंतिम दिनों यानि सतरावीं शताब्दी में लिखी गई, तो दूसरी तरफ औरंगजेब के अंतिम दिनों में रतन कंठ संस्कृत इतिहास की नकलें तैयार कर रहा था। इसके साथ-साथ वह सूर्य शतक (सूर्य देव के प्रशंसा में शलोक) जैसी विस्तीर्ण कविताए भी लिख रहा था। रतन कंठ सहकालीन कवि होते हुऐ भी देदमरी की वाकात कश्मीर में कोई स्थान नहीं पाता। तत्पश्चात इस में सिर्फ फारसी कवियों का वर्णन है।

यह बात भी ऐतहासिक सत्य है कि सूफिये, संतो, मौलवियों और पंड़ितों के मध्य निकट संबंध भी रहे हैं। इन संबंधों का वर्णन हमें कश्मीर के लोक कथाओं, परम्पराओं, सूफी कवियों के परिस्थिति व निर्माण, यहाँ तक कि समकालीन वाकात जैसे अहद जरगर और स्वामी विधाधर की परस्पर अनकुलता अर्थात अहद जरगर और भाग्यवान द्यद के बीच अध्यात्मिक आदान प्रदान हर जगह मिलती हैं। फारसी इतिहासों में कश्मीर के साधु संतों के विष्य में एक समान चुपी ने हमें कश्मीर के मूलभूत संत परम्पराओं की सुचना से वंचित रखा है।

गोसोन्य गोंड़ आश्रम के संदर्भ में यह पुस्तक इस कमी को अंश मात्र पूरा करने का एक छोटा प्रयास है। इन इतिहास के कोनों में

इसके लिए हम आश्रम के जीवित साधु महराजों स्वामी प्रेमनाथ जी और स्वामी पृथ्वीनाथ जी के आभारी हैं, कि उन्होंने अपने मस्तिष्क में बन्द कुछ पुष्ठों को खोल कर कश्मीर के हिन्दओं को अपने एक सुनहरी अध्याय से सुचित कराया है। अवश्यकता इस बात की है कि इन परम्पराओं को जहां तक यथा-तथा प्रकाश में लाया जाऐ। इस प्रयास से निष्कासित कशमीरी विशेषत: नवयुवक पीढ़ी अपनी विरासत से परिचित रहें।

स्वामी आत्माराम जी मैमोरियल ट्रस्ट श्रीमान महाराज कृष्ण भट्ट का आभारी है कि उन्होंने अपना मूल्य समय देकर आश्रम के साधु महाराजों की वाणी को लिखित रूप में लाकर एक पवित्र कार्य किया है। परमेश्वर इन्हें इस सुकर्म का फल दें। ट्रस्ट श्री ऐम. के. संतोशी जी और श्री प्रदीप जी खोड़बली का भी आभारी है कि उन्होंने इस पुस्तक की व्याकरण संबंधी त्रुटियों को ठीक किया।

**डॉ० आर.ऐल.भट्ट**
प्रधान
स्वामी आत्मा राम मेमोरियल ट्रस्ट
गोसोन गोंड़, आश्रम, बोड़ी जम्मू।

21 दिसम्बर 2012

गुर्रूब्रह्मा गुरू विषणु गुरू साक्षात महेश्वरा।
गुरूरेव जगत्सर्व तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

# जेय गुरूदेव

मेरे दादा जी को साधु संतों से बहुत स्नेह था। इस कारण बालपन से ही मेरे मन में भी उनके लिए बड़ी श्रद्धा है। जब भी में किसी साधु संत के अदभुत कार्य सुनता या देखता हूँ मैं बहुत चकित रह जाता हुँ। मेरे अंदर एक प्रवाह का संचार होता है। जब से बोड़ी जम्मू में श्री आत्मा राम जी का आश्रम बना, तब से मैं इस आश्रम से जुड़ा हूँ। इस आश्रम से मुझे गरु शिष्य की वास्तविका का ज्ञान हुआ। मुझे लगता है कि आजकल की इस सृष्टि में एसे महात्मा साधु संत बड़ी कठिनाई से मिलते हैं जिन के किये हुऐ आदभुत कार्य से मनुष्य चकित रहे हो।

भगवान ने मनुष्य को इस पृथ्वी पर लाकर अपने जन्म को सार्थक करने का अवसर दिया है। हमें अपने जीवन को अच्छे कामों में लगाना चाहये। इश्वर की भक्ति हृदय से करनी चाहये। भगवान को पाने के लिए बुरे कामों को छोड़ कर मन का मेल दूर करके इसे निर्मल करें। अपने विचारों में पवित्रता और वाणी में मधुरता लाये। मनुष्य को चाहये कि अच्छे कर्म करें। मुझे यह किताब लिखने में अत्यन्त हर्ष है। इस पुस्तक में अनेक त्रिट्रियाँ हैं। परन्तु आप यह जानकर उन्हें मांफ अवश्य कर देंगे कि मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ, जिसे अनुराग के सिवा भाषा का कोई प्रबल ज्ञान नहीं है। में भगवान से

प्रार्थना करता हूँ कि हम सब प्राणियों को सदबुद्धि प्रदान करे ताकि हम जीवन में उचित मार्ग पर चल कर अपने जीवन को सफल बना सके। मेरा आश्रम के समस्त साधु, संतो एवं गरू शिष्यों को शत शत प्रणाम।

जय श्री कृष्ण

**महाराज कृष्ण भट्ट**
'कमल कुंज' लक्ष्मी विहार,
बोड़ी, जम्मू।

* * *

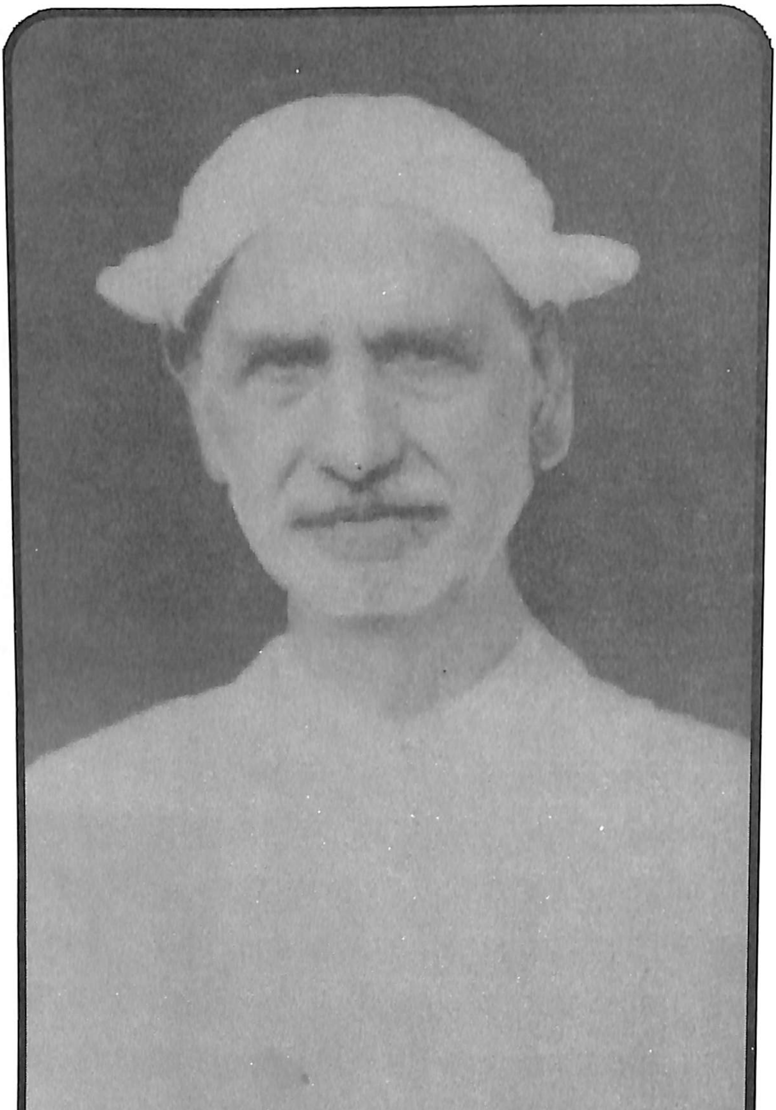

स्वामी आत्माराम जी

# आश्रम गोसोन्य गोंड़

कशमीर ऋषियों और सन्तों की भूमि रही है, इस कारण इस कों ऋषि वाटिका कहते हैं। यहां के अस्थापनों का इस धरा की ख्याति में बहुत बड़ा योगदान है और यह अस्थापन सारे भारत वर्ष में प्रसिद्ध हैं। कशमीर में अनन्त नाग एक प्राचीन और बड़ा उपनगर है। इस के दक्षिण में नौ मील की दूरी पर गोसोन्य गोंड़ आश्रम स्थित है। आश्रम के पूर्व में प्रसिद कोकर नाग और दक्षिण में वेरीनाग के प्रमुख रमणीय स्थान हैं। आश्रम तक पक्की सड़क और बस सेवा चल रही है। हर समय प्रत्येक जात के लोग यहां पर आते रहते थे। जिन में साधु संत भी शामिल थे। जिस के कारण यह आाश्रम बहुत प्रसिद रहा है। इस आश्रम की खास बात यह थी कि जब भी कोई आश्रम के प्रवेश द्धार से अन्दर आता तो उस के दुष्ट विचार सदभावना में बदल कर उसके मन में शांति का अनुभव हो जाता। यहाँ पर बहुत से सन्तों ने तपस्या की है और ईशवर मार्ग पर चल कर साक्षात

वाक सिद्धी पाई है। यह आश्रम पहले से ही ब्रहमचारी आश्रम रहा है, जो महात्मा लोग यहां रहे हैं उन के लिए ब्रह्मचर्य का पालन, आश्रम की देख बाल, अतिथियों का आादर सत्कार, अन्न पानी की व्यवस्था और गरु शिष्य मर्यादा पालन करना आश्रम के नियमों में शमिल था।

यह आश्रम बहुत पहले से चला आ रहा है, पहले गोसोन गोंड़ गोसोन पड़ाव से प्रसिद था। जम्मू-श्रीनगर राज्यमार्ग बनने से पहले यात्री अमरनाथ जी तीर्थ के दर्शन के लिए जम्मू से पदैल आया करते थे और कशमीर में प्रवेश होते ही वह वेरी नाग से होकर यहां गोसाइ पड़ाव मैं कुछ समय थकावट दूर कर के अनन्तनाग से होकर अमर नाथ जी की यात्रा पर चल पड़ते थे।

# स्वामी जगननाथ बाबा

इस आश्रम का पहला महात्मा स्वामी जगन नाथ बाबा शंकर पौरा सीता कुंड़ में ठहरा था। वे एक महान प्रतिभाशाली बुद्धि जीवी थे। कहावत है कि सीता माता ने अन्त समय पर इसी स्थान पर पृथ्वी में प्रवेश किया है और उसी समय से निर्मल जल वहां से प्रकट हुआ है, आज कल भी जब वहां पर जोर से आवाज लगाते हैं :

"हे सीते राम जी आया"

तो उस समय पानी में बुलबुले चढ़ते हैं। लोग जोंक-दर-जोंक आने लगे, बाबा को भीड-भाड अच्छी नहीं लगी अत: उन्होंने गोसोन्य गोंड़ में पूर्ण शांत वातावर्ण देख कर यहां पर रहने का निर्णय करके और इसे आश्रम का रूप दे दिया। महात्मा जगननाथ जी के समय यहां गौरी शंकर का एक मंदिर और एक धर्मशाला बनाई गई।

# स्वामी जीवन साहब

बालपन से ही जीवन साहब भगवान में लीन रहते थे, स्वामी जगननाथ बाबा जी के अन्तर ध्यान के समय स्वामी जीवन साहब गोसोन्य गोंड़ आश्रम पर आए थे, बहुत वर्षों तक वहां पर रहे और तपस्या की। धूनी हर समय जलती रहती थी। एक दिन जीवन साहब ने उस जलती हुई धूनी में से एक लकडी निकाल कर एक स्थान पर धरती में गाढ़ दी जो आजकल एक बहुत बड़ा चीड का वृक्ष बन गया है। वे हुक्का पीते रहते थे। गोसोन्य गोंड़ में सिद्धियां प्राप्त कर के जीवन साहब लोधुव गांव में एक स्थान पर रहने लगे। उनकी आध्यातिमक शक्ति की चर्चा सारे कशमीर में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने फारसी भी पढ़ी थी। वे एक लंगोट के सिवाय कोई भी वस्त्र नहीं पहनते थे।

# स्वामी गंगाराम जी

जीवन साहब के मेलमिलाप से स्वामी गंगाराम जी जिन का जन्म मटन तीर्थ में हुआ था, इस आश्रम पर आऐ और आश्रम की भलाई के लिए हर समय काम करते रहे। महराजा प्रताप सिंह जी भी इस आश्रम में आया करते थे और स्वामी गंगाराम जी को गुरु जैसा आदर प्रधान करते थे। अपने हाथ से लिखे एक आदेश द्वारा महाराजा प्रताप सिंह ने इस आश्रम को गंगाराम जी के नाम कर दिया । धरमार्थ ट्रस्ट से एक वर्ष में साठ रुपये ड़ी-सी- अनन्तनाग के द्वारा आश्रम को मिलते थे।

स्वामी जी बड़े गुणवान और हर काम की जानकारी रखते थे। उन्होंने आश्रम की मर्यादा रखते हुए एक शिष्य महात्मा तोतकाक जी को आश्रम में रखा। महात्मा तोतकाक श्रेष्ठ संत थे। यह स्थान ही ऐसा है, बस्ती से दूर, शांति पूर्ण वातावर्ण, सफेदे और चिनार के वृक्ष इस आश्रम को चार चांद लगाते हैं। इस के अतिरिक्त आश्रम में बहुत से फलदार पेड़ हैं। जैसे सेब, खोबानी, नाशपाती, अगूंर, अखरोट इतादि। नाना प्रकार के

फूल और गुलाब की क्यारियाँ आश्रम को मनोरम करती हैं। बिन-बिन प्रकार के पक्षियों की बोलियों से मन आनंद में डूब जाता है, जिससे सारा आश्रम एक तपोवन लगता है। इस के परिसर में कोकरनाग से आते पानी की एक धारा बहती है। स्वामी जी महराज ने मंदिर के आगे एक कुआं खुदवाया जिस का पानी स्वच्छ और पाचक है। बारह फूट की गहराई पर ही इस कुआं में पानी निकल आया यधपि चारों तरफ की भूमि इस से बहुत नीची है, किसी को आशा ही नहीं थी कि उस कुओं में पानी इतनी कम गहराई में निकल आऐ गा, यह स्वामी जी की कृपा थी।

# स्वामी मिर्ज काक जी

स्वामी मिर्ज़ काक जी (काक साहब) हांगलगोड़ं निवासी थे, कशमीर के माने हुऐ संतों में से एक हैं। उनकी दिव्य शक्तियों के कारण वे बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने बहुत से चमत्कार किये हैं। वे बड़े अच्छे वाख कहते थे। वे और गोसोन्य गोंड़ आश्रम के संत आपस में मिलते रहते। स्वामी जी कई बार गोसोन्य गोंड़ आश्रम में ठहरे हैं। उन्होंने सादगी और सरल जीवन व्यतीत किया और अपनी साधना में लीन रहते थे उन के भक्त और शिष्य हर समय अपने गरु महाराज का गुण गाण करते रहते हैं।

उनके अद्भुत कार्य मनुष को आश्चर्य चकित कर देते हैं। काक साहब प्रात: उठकर नदी पर जाकर स्नान, सन्धया किया करते थे। एक दिन वह नियमित रूप से नदी की और जा रहे थे कि रास्ते में एक स्थान पर जनता इकत्र हो गऐ थे। काक साहब उनके पास गऐ।

जनता ने काक साहब का स्वागत किया। काक साहब ने एक गाँव वाले से पूछा: ''कया बात है, आज आप यहां इकत्रत क्यों हुऐ हो ?'' एक मनुष ने बोला: ''महाराज यह नया मकान इस पंड़ित जी का है। आज इस मकान के उपर छत के लिए बड़ा खम्भा (ड़ीकल) रखना है। इस कारण इन लोगों को सहायता के लिए बुलाया है। प्राता आठ बजे से महूर्त है।'' काक जी नदी के ओर चल पड़े।

मुहूर्त के समय मिसत्री ने जनता की सहायता से यह बड़ा खम्भा (ड़ीकल) मकान के स्तभ्यों पर रखने के लिए उठा लिया, यह खम्भा चार पांच इनच छोटा पड़ गया, इस को नीचे उतारा। मिसत्री, मकान मालिक और जनता भी निराश हो गऐ कि यह क्या हो गया।

काक साहब नदी से वापस आ गए, उस मकान के समीप जाकर उन्होंने जनता से पूछा ''क्या आप ने अभी तक खम्भा उपर नहीं चड़ाया।'' मकान वाले पंड़ित जी बोले ''महाराज यह मेरा सौभाग्य नहीं है, उपर खम्भा (ड़ीकल) चडा के थोड़ा सा छोटा पड़ गया, में बहुत निराश हूँ, अब क्या करों।'' ''पंडित जी निराश होने की अवशकता नहीं है। छोटा हो गया तो क्या हुआ, मोटा तो है।'' काक साहब ने कहा। गांव वालों को काक साहब पर पूरा विशवास है। उस जनता में से एक ने स्वामी जी को विनती की कि आप इस खम्भे के उपर अपना हाथ फेर दीजये। स्वामी जी ने उसके उपर अपना हाथ फेर दिया और कहा ''आप सब इसको इदर से और उदर से थोड़ा खींचो, यह पूरा हो जाऐ गा। उठाव हरि ओम तत सत्''। मिसत्री ने जब इस खम्भे को स्तम्भ्यों पर रखा अब वह पूरा बेठ गया। सब खुशी से जूम उठे और बोले काक साहब की जय, स्वामी जी की जय।

# महात्मा तोतकाक जी

महात्मा तोत काक जी एक बहुत प्रसिद्ध संत रहे है। भक्त जन दूर दूर से उन के पास़ आकर इशवर आनन्द प्राप्त करते थे। उन के प्रवचन से जनता बहुत प्रभावित होती थी आस पास के मुसलिम जनता उन्हें ''तोत खोदाई'' कहा करते थे, बड़े सीधे-साधे शांत सुभाव, गुण वान, परोपकारी महात्मा थे। उन के समय में आश्रम में अधिक विस्तार हुआ।

एक प्रेमी भक्त जो श्रीनगर के बख्शी परिवार से थे स्वामी जी को अपना गरू मानते थे। एक दिन उसका दो साल का बच्चा बीमार हुआ और दो तीन दिन में ही मर गया, बच्चे के पिता जी ने घर में किसी को रोने नहीं दिया और अपनी पत्नी से कहा ''संध्या हो गई है, इस समय हमें आश्रम जाने के लिए कोई गाड़ी नहीं मिलेगी। इसलिए हम सवेरे गरु महाराज के पास जाऐंगे।'' उनको गरु महराज पर उटूट श्रद्धा थी। रात बड़ी कठिनाई से काटी और सुबह मृत बच्चे को गोद में लेकर चल पड़े। संयोग से बच्चे की मासी उस दिन उन के घर आई हुई थी, वह भी साथ चल पड़ी। बहुत जोर की वर्षा हो रही थी, गाडी अनन्तनाग पंहुची तो नव मील पदैल सफर कर के शाम के समय सात बजे आश्रम पहुंच गऐ। स्वामी जी अपने बिस्तर पर बैठे थे। बच्चे के पिता जी ने दरवाजा खटखटाया।

स्वामी जी बोले ''कौन हो भाई ?''

''में आपका दास बख्शी आया हूँ।''

''इस समय इतनी देर से, और वह भी बारिष में।''

दरवाजा खोलते हुए स्वामी जी ने कहा ''अन्दर आ जाओ अधिक सर्दी लगी होगी।''

भक्त ने बच्चे के विषय में कुछ नहीं बोला। स्वामी जी ने बच्चे की मां से कहा कि तुम रसोई में जाकर गर्म-गर्म चाय ले आव, सर्दी दूर हो जाऐगी और बच्चे की मासी से कहा कि तुम इस बच्चे को मेरे पास सुला दो, और तुम भी रसोई में जाकर उसकी साहायता करो। बच्चे को अधिक सर्दी लगी है। स्वामी जी ने इस बच्चे के उपर अपनी चादर ड़ाली। कुछ समय में चाय आई, स्वामी जी ने बच्चे की माँ से कहां ''बच्चे की चाय मेरे हाथ में दे दो।'' स्वामी जी ने बच्चे की पीठ थपथपाइ और बोले बेटे उठो चाय पियो, बच्चा ऐसे ही लेटे रहा, स्वामी जी ने दो तीन बार पीठ थपथपाइ और फिर बोले ''उठो अब देर मत करो, चाय ठंडी हो जाए गी।'' अचरज की बात है कि बच्चा उठा और चाय मांगने लगा। स्वामी जी चाय पिलाते रहे, जब तक न गिलास खाली हो गया, मानो कुछ हुआ ही नहीं था। यह गरू महराज की अपार कृपा थी कि उनका बच्चा चौबीस घंटे के उपरान्त ठीक हुआ। बड़ा होकर वह आश्रम का सेवक बना। स्वामी जी ने ऐसे कितने चमत्कार किये हैं जिस के लिए उन्हें ''तौत खोदाई'' कहा करते थे। वह एक महान सिद्ध पुरुष थे।

स्वामी तौत काक जी के समय में ही चोरों ने आश्रम से धान चुराने का विचार किया। धान को दो स्थानों पर रखा जाता था, जिस को कशमीरी में खल कहते हैं। चोर रात के एक बजे आएं, भीतर वाले खल के पास स्वामी जी हुक्का पी रहे थे, जब चोरों ने स्वामी जी

को वहां पर देखा तो अन्दर वाले खल से धान चुराने के लिए अन्दर आगऐ तो उन्हें वहां पर भी स्वामी जी हुक्का पीते नजर आऐ। यह देख कर चोर आश्चर्य में पड़ गए। अन्दर भी स्वामी जी – भीतर भी स्वामी जी। स्वामी जी ने कहा ''धान चुराने आऐ थे तुम ने यह नहीं सोंचा। यदिपि तुम धान चुरावो गे तो स्वामी जी क्या खाएगा।'' चोर सहमे हुए आगे आए और स्वामी जी के पांव पकड़ कर माफी मांगने लगे। ''स्वामी जी हमे माफ कर दो, हम से बहुत बडी गलती हो गई।'' स्वामी जी बोले ''खुदा के घर में जो चोरी करता है, उस के उपर बिजली गिरती है, वह आग में जलता है। कान पकडो, ऐसा काम कभी न करना।'' यह कहकर चोरों को माफ कर दिया।

एक दिन - दिन के तीन चार बजे चिनार के साये में सत सगं हो रहा था, एक भक्त ने स्वामी जी से कहा महराज नमक वाली चाय चाहिए। स्वामी जी ने एक सेवक को नमक वाली चाय बनाने को कहा, सेवक बोला महराज दूध नहीं हैं। एक साधु ने स्वामी जी से मिन्नत की महराज कुछ कीजये, चाय आवश्य पीनी है स्वामी जी कुछ दूर जाके एक ऊँची जगह पर गये और अवाज लगाई ''ओ शाबान शेर गोजरी दूध लाव।'' वह आश्रम से दो मील की दूरी पर रहता था। स्वामी जी ने सेवक से फिर कहा ''तुम नमक वाली चाय तैयार करो।'' सत सगं चलता रहा, सभी भजन कीर्तन में लीन हो गए थे। कुछ समय पश्चात शेर गोजरी दूध ले कर आया, साधु जन में से एक ने उसे पूछा ''तुम ने इस समय यह दूध कहां से लाया।'' तो गोजर बोला ''में पास में गाऐं चरवाने ले आया हूँ, एक वृक्ष के साये में मुझे नीदं पड़ गई, पता नहीं किसी मोटे से पुरुष ने मेरे को लात मारी और

कहने लगा, तू सोया है, शीघ्र उठो, दोपहर समाप्त हो गई है, दो सेर दूध बाबा जी को गोसोन गोंड़ आश्रम में दे आव।'' में ने शीघ्र बर्तन लाया, गायों से दूध लिया और यहां आया। यह सुन कर सब भक्त और साधु जन चकित रह गए। कुछ समय पश्चात सेवक ने महराज से बोला चाय तैयार हो रही है। इस पर एक और साधु महराज से बोले ''इस चाय के साथ अगर गर्म गर्म नानवाई की रोटी होती कितना मज्जा आता।'' स्वामी जी इस से सहमत न हुऐ तो सबों ने चाय न पीने का संकल्प लिया। यह सुन्ने के पश्चात् स्वामी जी विचार कर के बोले ''अच्छा मेरी चादर ले आव।'' एक भक्त ने उन के कमरे से चादर लाकर स्वामी जी को दे दी, इस चादर को अपने कंधे पर ड़ाल कर आश्रम के दरवाजे से बाहर गऐ। पंदरह मिनट के पश्चात स्वामी जी वापस लोटे तो उस की चादर में गर्म गर्म रोटियाँ थी, जबकि आश्रम के आस पास मीलों तक किसी हिन्दू नानवाई की दुकान नहीं थी। सभी संतों, भक्तों ने स्वामी जी का प्रशंसा की और उनकी साधना शक्ति पर मोहित हुए। ऐसे बहुत से अधभुत करामातें स्वामी जी से जुड़े हैं।

# स्वामी नन्दलाल जी कौल

स्वामी नन्दलाल जी कौल ब्रह्मचारी संत थे। बालपन से ही उनकी ईश्वर भक्ति और संगीत में बडी रुची थी। कशमीर की सभ्यता और संस्कृति के परम पुजारी थे। लोगों को स्वामी जी के प्रति गहन आदर एवं प्रेम की भावना है। उन्होंने भी कई करामात किये हैं। उन की आत्मिक शक्ति की चर्चा सारे जम्मू व कशमीर में आज भी होती है। स्वामी नन्दलाल जी कशमीर में अनन्तनाग के पास स्थित स्वामी आत्माराम जी के आश्रम गोसोन्य गोंड़ में बहुत समय तक रहे और अपनी साधना करते रहे। स्वामी जी वहां से निकल कर कुपवारा टिक्कर में चले गऐ जहां उन्होंने अपना आश्रम बना लिया। वे मां

शारि़का के प्रगाढ़ उपासक थे।

एक भक्त के पास एक गाय थी। उस गाय ने कई दिनों तक दूध नहीं दिया। उस भक्त को स्वामी जी पर पूरा विष्वास था। वह स्वामी जी के पास गया और उन से गाय के दूध न देने की बात कही। स्वामी जीं मुस्कराए और बोले "दूध लेते समय गाय कों बोलना नन्दलाल के लिए दूध दे दो।" घर जाकर उस भक्त ने वैसे ही किया। अचंभे की बात है कि गाय के स्तनों से दूध निकल गया।

# स्वामी सोनह काक जी

स्वामी तोत काक जी ने महात्मा सोनहकाक जी को अपना शिष्य बनाया। वे विद्वान, सुशील सुभाव वाले, वेदांती ब्रह्मचारी थे। आश्रम की देख बाल, अतिथि सेवा उनकी स्वाभाविक भावना थी। स्वामी तोतकाक जी के अन्तर ध्यान के पश्चात सोनह काक जी ने आश्रम संभाला। वे उच्चकोटी के सन्त ज्ञानी थे। आस-पास के गांव तथा कशमीर से हजारों की संख्या में भक्त जन, साधु सन्त प्रति दिन वहां आया करते थे। सोनह काक जी स्वामी अमरनाथ जी की यात्रा पर हर वर्ष नियमित रूप से जाते थे।

वेरीनाग के पास वितस्ता भगवती का प्रसिद्ध अस्थापन है जहां पर हर साल 'व्यथत्रवह' का मेला लगता है, वहां के स्वामी बीर काक जी बहुत बड़े तपस्वी महात्मा थे, वे स्वामी सोनह काक जी का बड़ा आदर करते थे और आश्रम में आकर 'गौतम नाग' आश्रम जाया करते थे। उमानगरी के स्वामी कृष्णानन्द जी भी माने हुऐ महात्मा थे, इन सब महात्माओं के आश्रमों में सतसंग, भजन कीर्तन व मंड़ली की गूंज से स्वर्ग मण्ड़ल का आभास होता था। अधिक समय के पश्चात एक वर्ष गोदावरी (कशमीरी में गुदर) का तीर्थ में तेरह वर्ष बाद मेला लगा। स्वामी सोनह काक जी ने स्वामी बीर काक जी से प्रार्थना की कि इस साल हम भी 'गुदर तिर्थ' यात्रा करेंगे जो कुलगाम नगर के निकट गुदर गांव के समीप है।

कुछ महात्मा गोदावरी (गुदर) तीर्थ के लिए चल पड़े। तीर्थ में

नहा धो कर पूजा अर्चना की। शांत मन से वापसी पर कुलगाम बाजार में चल रहे थे। उनका साधु वेश सब को सुन्दर लग रहा था, बाजार में जो भी उन को मिलता, नमस्कार करके उन के पांव पड़कर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। उसी समय एक दुकान पर एक लड़का जो 16 या 17 साल का था, अपने घर वालों ने दुकान की देख बाल के लिए रखा था। उसने जब इन साधुओं को देखा, वह दुकान से उतरा और इन का चरण र्स्पष किया। स्वामी सोनह काक जी ने लड़के की और देख कर कहा ''तू हमारे साथ चले गा।''

यह लड़का इन साधुओं में इतना खो गया कि दुकान की चिन्ता न करते हुऐ इन के साथ चल पड़ा। नाम पूछने पर इस लड़के ने अपना नाम आफताब कौल और अपने पिता जी का नाम राज हलदर कौल बताया। उस दिन वे बुगोंड़ पहुंचे, रात को वे एक भक्त के घर रहे। प्रात: काल वहां से अनन्तनाग के लिए चल पड़े, वहां एक और भक्त के घर रात बिताई तो तीसरे दिन सभी महात्मा जन अपने अपने आश्रम की ओर चले गए। स्वामी सोनहकाक जी इस लड़के को अपने आश्रम गोसोन्य गोंड़ ले आऐ।

उधर राज कौल अपने लड़के को ढूंढ रहा था, घर में सभी चिन्तित थें, अब किसी ने राज कौल को बताया, ''बाजार से दो चार साधु जा रहे थें तो आप का लड़का भी उन के साथ चल पड़ा।'' पूछते पूछते पता चला कि उस का लड़का गोसोन गोंड़ में है। राज कौल भी गोसोन गोंड़ पहुँच गया। आश्रम के अन्दर आते ही सब से पहले इस लड़के ने ही अपने पिता जी को देखा तो उस ने एक वृक्ष और झाड़ियों के पीछे अपने आप को छुपा लिया। राज कौल सीधा महात्मा जी के

कमरे में गया, प्रणाम किया और बोले ''माहराज हम और हमारे घर वाले बहुत व्याकुल हैं कि हमारा लड़का कहाँ गया, फिर पता चला कि वह आप के साथ आया है। मैं विनती करता हूँ कि मेरा लड़का मुझे वापस कर दो।'' कुछ देर सोचने के पश्चात स्वामी जी ने एक सेवक से कहा ''ज़रा देखो यह लड़का कहाँ गया उस को बुलाओ।'' बहुत ढूंढने पर भी लड़का नहीं मिला और अब सायंकाल भी होने को था, स्वामी जी ने राज कौल से कहा ''में आप के लड़के को बतादूँगा कि आप उसे वापस लेने आऐ थे।'' राज कौल वापस कुलगाम जाने के लिए निकल पड़ा।

कुछ पल में वह लड़का स्वामी जी के पास आया। स्वामी जी ने कहा ''तुम्हारा पिता जी तुम को यहां से अपने घर ले जाने के लिए आया था, इस लिए तुम वापस अपने घर जाओ।'' कुछ पल सोच कर लड़के ने निराश हो कर बोला ''आप ने हमे अपने साथ चलने को कहा, अब आप क्यों मुझे वापस भेजना चाहते हो, अपने वचन पर रहिये, में भी अपने इच्छा से आश्रम में रहने आया हूँ।'' यह कह कर स्वामी जी के चरणों में गिर कर रो पड़ा, ''मुझे यहां रहने दो, मुझे वापस मत भेजो, स्वामी जी में आप से विनती करता हूँ मुझे अपने चरणों में ही रहने दो में इस आश्रम को स्वर्ग बना कर दिखा दूँगा।'' ''अच्छा रोना बंद करो - ठीक है।'' स्वामी जी ने उस के सिर पर हाथ सहलाते हुए अपने एक सेवा कार को बुला कर उसे निर्देश दिया कि इस लड़के के पिता जी को संदेश भेजो, आश्रम पर आकर मुझ से मिले। कुछ समय बाद वह आकर स्वामी जी से मिले। स्वामी जी ने राज कौल से कहा ''में ने आपके बेटे को वापस घर जाने के लिए

बहुत समझाया, परन्तु यह मानता ही नहीं है।'' फिर लड़के ने अपने पिता जी से कहा ''मुझे यहां रहने दो, में घर वापस नहीं जाऊँगा, यदि मुझ पर ज़ोर ज़बरदस्ती करोगे तो में विष पी लूँगा। इस कारण मुझे यहां रहने दो।'' यह सुन कर राज कौल चकित रह गया और कुछ न कह सका सिवाय इस के कि तुम आश्रम में रह सकते हो, और आश्रम से दुखी हो कर चले गए।

# स्वामी आत्माराम जी

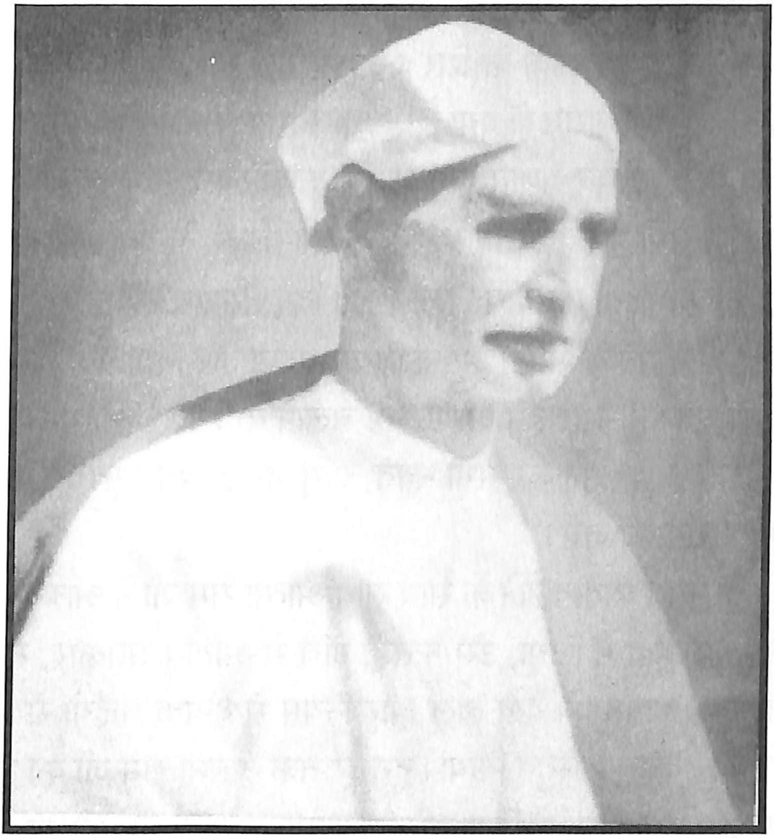

इस लड़के की धारना, प्रेम और आध्यात्म की और प्रेरणा देखकर स्वामी जी अधिक प्रसन्न हुऐ। उस के गुण बुद्धि आत्मविश्वास की सरहाना की, आश्रम में रहने के योग्य समझा।स्वामी जी ने उस से कहा ''रहो, खुशी से यहाँ रहो, आश्रम के नियमों का पालन करना, यह ब्रह्मचारी आश्रम है, आश्रम की देख बाल, अतिथि सेवा करना

और अब लंगर की उत्तरदायित्व तुम पर है।'' स्वामी जी को अपने मन में एक विचार आया और अपने अन्य महात्माओं से विचार विमर्श किया। स्वामी सोनहकाक जी वेदांती और ध्यान योगी थे 'हरे औम' उच्चारण कर के लड़के के सिर पर हाथ रख कर कहा ''आज से तुम्हारा नाम आत्माराम हो गया है।'' आत्माराम ने अपने गरु महाराज के पेरों पर पड़ कर प्रणाम किया और आशीरवाद मांगा। उस दिन आश्रम में सभी प्रसन्नचित हो गऐ। बिन बिन प्रकार के पकवान बनाऐ गऐ, कृषक भाइयों को चाय पिलाई गई। दिन भर सत संग होता रहा। स्वामी जी ने सब के सामने अपना विचार प्रकट कर दिया कि अब में बूढ़ा हो चुका हूँ, और इस आश्रम को चलाने के लिए ''आत्माराम'' को चुना है। यह सुन कर सभी भक्त, साधु जन उच्चतम स्वर में बोले ''आत्माराम की जय।''

समय व्यतीत होने के साथ साथ आत्मा राम जी ने आश्रम का काम काज हाथ में लिया, उस ने बड़ी रुचि से अतिथि सतकार, साधु संत सेवा, आश्रम की देख बाल और नियम से कृषक भाईयों से प्रेम भाव का उदाहरण प्रस्तुत किया। दूर दूर तक आत्मा राम जी का गुण गाण था हर एक कार्य में निपुणता और समय पर बुद्धि का सही उपयोग करने की अनोखी शैली थी। रात दिन काम करना उन का कर्म योग बन गया था। अपने व्यक्तित्व की गरिमा के अनुरुप वे प्रात: चार बजे बिस्तर से उठते, स्नान और स्वच्छ वस्त्र धारण करके आठ बजे तक पाठ पूजा करना उन का प्रति दिन का नियम था। स्वामी जी उस के काम काज से अत्यंत प्रसत्र थे। एक दिन प्रात: काल में स्वामी सोनहकाक

जी महाराज ने आत्मा राम जी को बुलाया और कहा "महात्मा आत्माराम तुम बुद्धिमान हो परन्तु वेदांत पढ़ने में ध्यान नहीं देते हो, आश्रम में कोई शास्त्र का ज्ञाता होना अति अवश्यक है। अब मेरे पास बल नहीं है कि तुम को पढ़ाओं। आत्मा राम जी ने संस्कृत भाषा का अध्यन किया। में तुम को आशर्वाद दुंगा तुम मेरी और आश्रम की बहुत सेवा करो। तुमं पर में अतियन्त प्रसन्न हूँ मेरे आश्रम का ध्यान रखना। करिशमा देखिए कि मूढ़ आत्माराम गरु की कृपा से महान विद्धान हो गए।" भक्तजनों को उनके दर्शन से परम सुख प्राप्त हुआ।

✷

# स्वामी नन्द लाल जी (नन्द बब )

स्वामी नन्दलाल जी बहुत बडे.पहुँचे हुऐ मस्ताना साधु थे। वे कभी शहर में तो कभी गांव में एक स्थान से दूसरे स्थान जाया करते थे। फारसी भाषा बोलते और लिखते थे। उन की भविष्यवाणी सच होती थी। वे शारिका मां की उपासना करते थे। हर समय उन के सिर पर हैट (अंगरेजी टोपी) और हाथ में एक लंबा ड़डा होता था। भजन और संगीत सुनने में उनकी बडी रुची थी। उन्होंने भी अपने आत्मा ज्ञान से कई चमत्कार किये हैं। वे भी कई बार गोसोन्य गोंड़ आश्रम पर आऐ और कई दिनों तक वहां पर रुक कर साधना की। मुसलमान, हिन्दू, गरीब, अमीर को एक ही नज़र से देखते थे। हर समय दो तीन

भक्त उनके साथ होते थे। एक के हाथ में कापी, कलम और दवात् होता था। किसी के लिए वह जो भी लिखते थे वह सच होता था। नन्द लाल जी को भविष्यवाणी का बड़ा ज्ञान था।

श्रीनगर में एक मनुष अपने साइकिल पर कहीं जा रहा था कि दूसरी ओर से स्वामी नन्दलाल जी आ रहें थे। नन्दलाल जी ने उसे रुकने को कहा, वह मनुष रुक गया। नन्दलाल जी ने उसे पकड़ कर पास में एक मकान के कमरे में बन्द कर दिया और बाहर से कमरे को ताला लगा दिया। जनता जो सड़क पर चल रहे थे वे यह सब कुछ देख रहे थे। परन्तु बब जी से किसी ने कुछ कहने का साहस नहीं किया। बब जी आगे निकल गऐ।

उस मनुष ने शोर मचाया ''मुझे छोडो, में ने कुछ नहीं किया।'' वहां पर और जनता इकत्रत हो गई, मकान मालिक भी आ गया। जनता ने मकान मालिक को उसे छोडने की विनति की। मकान मालिक ने उस पर दया कर के बन्द कमरे से मुक्त कर दिया तो वह शीग्रता से अपना साइकिल लेकर भागता मगरमल बाग के पास एक दुर्घटना में मारा गया। उस सन्त को यह ज्ञान था कि वह मरने वाला है उसने उस को कुछ समय के लिए मरने से बचाने की कोशिश की थी।

# स्वामी सोनकाक जी का निर्वान

स्वामी सोनकाक जी का देहांत ''माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी'' को हुआ था। आत्माराम जी ने सभी साधु संतों, भक्तों को बुलाया ताकि वे स्वामी सोनकाक जी का अन्तिम दर्शन कर सकें। दिन भर सभी आश्रम के परिसर में इकत्र हो गए, तो सायं काल होने से पहले आत्मा राम जी ने उन का दाह संस्कार कर दिया, आश्रम में मर्यादा के अनुसार वेदांत हवन भी किया गया।

आश्रम में लोगों का आना जाना लगा रहा, महात्मा जी ने लंगर के लिए रसोइ वाला और उसे सहयोग करने के लिए दो व्यक्ति रखे। आश्रम में 10-15 गायें भी थी, जिन की देख बाल वे स्वयं करते थे। आश्रम की 175 कनाल आबी और खुश्क आबी सोम 10 कनाल पट्टा शुदह जमीन है जो सब इस मंदिर के नाम पर महराजा ने दिया था। आश्रम की अपनी खेती होने से अन्न पानी की कोई कमी नहीं थी। फल बिक्री करने से आश्रम के दूसरे र्खचे चलते थे। मंदिर में भी चढ़ावा आता था, दिन ब दिन लोगों का आना बड़ गया। आश्रम की जगह कम थी इस कारण महात्मा जी ने आश्रम के परिसर में तीन मंजिल धर्मशाला बनवाई जिस की नकशकारी बेमिसाल थी। महात्मा जी सिद्धियों के स्वामी थे उन्के चर्चे अत्यतं दूर दूर तक फेलते गए। दर्शन मात्र से ही मनुष्य के मन में शांति आती थी। अनन्तनाग के वजीर वजारत श्री रोगनाथ मटटू आश्रम में आया करते थे, उनका महात्मा जी से बड़ा प्रम भाव था, आश्रम की आवश्यकता को वे पूरा करते थे। दूर दूर से लोग

उनका आर्शवाद पाने के लिए आते थे स्वामी ज़ी के अनेक भक्त बन गए थे, वे बीमारों की तीमारदारी भी करते थे। गुरु महाराज के आर्शवाद से शास्त्र बोध कंठस्थ था। सारे भारत से विद्वान आश्रम में आया करते थे। स्वामी जी उच्चकोटि के संत और दिव्य द्रष्टी वाले थे जो भक्तों का सदेव उद्धार करते थे।

# स्वामी सर्वानन्द जी

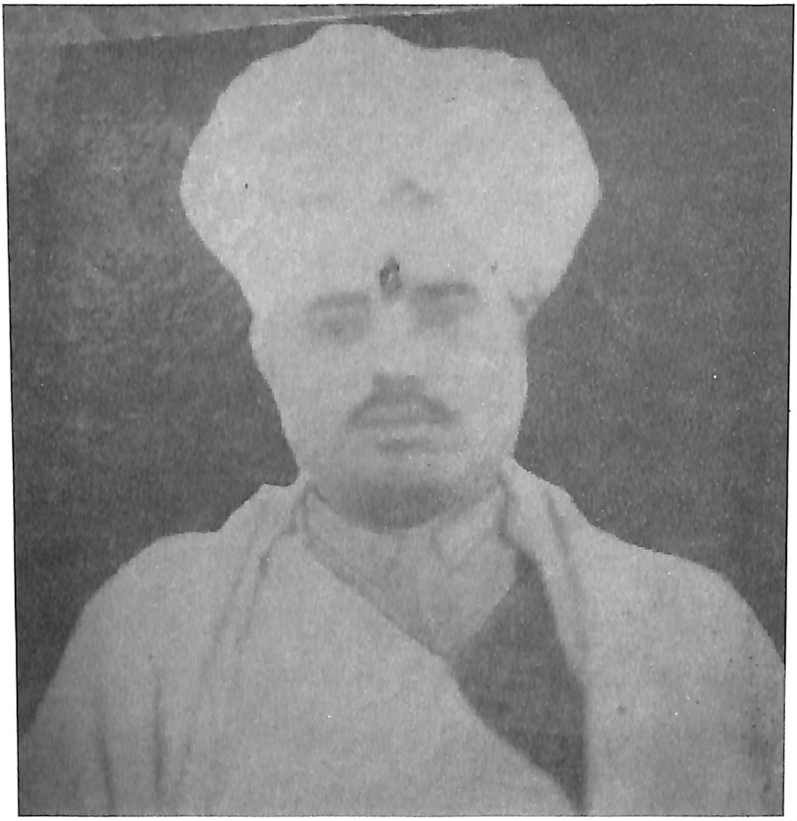

कशमीर में एक गांव वेसू जो कुलगाम क्षेत्र में आता है आश्रम से दस मील की दूरी पर है वहां के पंड़ित घराने में एक लड़के का जन्म हुआ जिसका नाम सर्वानन्द रखा गया। घर वालों ने गांव में अध्यापक के पास पढ़ने के लिए भेजा। वह लड़का पढ़ने के बाद उसी गांव में बहने वाली एक नदी के किनारे बैठकर छोटे-छोटे गोल गोल पत्थर लाकर मंदिर बनाता और बीच में एक पत्थर को रखकर उसे भगवान

मान कर उसे सिन्दूर और फूल चड़ा कर उस की पूजा करता था। किसी ने यह सब देखकर उस के घर वालों को बताया तो घर वालों ने उस को यह सब कुछ न करने के लिए कहा। इस कारण वह क्रोधित हो गया और घर से भाग कर अनन्तनाग जाकर स्वामी माधवानन्द जी के शरण में आया। माधवानन्द माने हुए साधु थे सर्वानन्द ने उनके पांस पढ़ना आरम्भ किया और एक साल तक उन से विद्या ग्रहण की।

एक दिन प्रात:काल जब वह नागबल से नहा कर वापस लौट रहा था, उस ने देखा एक दुकान के अग्रभाग में कुछ व्यक्ति खड़े थे। वह रुक रुक कर वहां की और देखता रहा। यह दुकान स्वामी माधवानन्द के घर के पास ही था। स्वामी जी मकान के उपर से देख रहे थे। घर आकर सर्वानन्द पर क्रोदित हो गए और बोले ''तुम वहां पर रुक रुक कर क्या देख रहे थे वह दुकान कसाई की है जिस की भी दृष्टि उस दुकान पर पड़ती है वह पापी हो जाता है, उसे प्रायश्चित करना पड़ता है। में तुम को नहीं पढ़ाऊँगा।'' यह कहकर उसकी किताबें खिड़की से बाहर सड़क पर फेंक दी। सर्वानन्द ने माफी मांगी, पांव पकड़ लिए, फिर भी उन्हों ने पढ़ाने से इन्कार कर दिया। सवान्द अत्यन्त उदास हो गए और नीचे जाकर अपनी किताबें उठा ली। भगवान की मन में श्रद्धा थी। दुखी मन से वह गोतम नाग आश्रम के स्वामी गाशहकाक जी के पास चले गए और उन को यह सारी बात सुनाई। सर्वानन्द जी ने गाशहकाक जी से आश्रम में रहने के लिए आज्ञा मांगी। लड़के में सचाई, भगवान भक्ती, बुद्धिमानी और धार्मिक धारणा होने पर उस को आश्रम में रहने की आज्ञा मिली जिससे सर्वानन्द जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। आश्रम में रहने के साथ साथ शिक्षा भी प्राप्त कर ली, वहां पर उस

ने बहुत समय तक ध्यान साधना की जिस से उस को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। इसने गाशकाक जी और आश्रम की बहुत सेवा की जिस कारण महात्मा जी उस पर अत्यन्त प्रसन हुऐ थे।

कुछ समय व्यतीत होने पर इस आश्रम में स्वामी गाशहकाक जी के दर्शन के लिए श्री शंकरपंडित उमानगरी निवासी आऐ। एक दो दिन आश्रम में रहने पर उन्होंने इस लड़के को देखा। र्सवानन्द जी ने अपनी सेवा से शंकर पंड़ित का मन मोह लिया था। पंड़ित जी ने महात्मा गाशकाक जी से एक र्प्राथना की, आप जानते हो मेरा कोई लड़का नहीं है, इस कारण आपके पास यह लड़का है। आप इसे मुझे प्रधान करें। यह सुशील, गुणवान लड़का है। मैं इस को अपने बेटे की तरह पालन पोषन करुँगा। गाशकाक जी ने बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव सहज स्वीकार किया। शंकर पंड़ित कश्मीर में विद्वान और गुणी माने जाते थे। आश्रम से निकल कर शंकर पंड़ित और र्सवानन्द ब्रारि आंगन पहुंच गऐ।

सात साल तक उदर भी सर्वानन्द जी ने विद्या ग्रहण की और एक दिन शंकर पंड़ित के मन में खयाल आया कि यह लड़का अब बड़ा हो गया है। इस का विवाह रचाना चाहिए और सारा व्यापार इसको सोंप दों, वह अपने सगे सम्बन्धी से कहता गया कि सर्वानन्द की शादी के लिए कोई सुशील लड़की देख लो। किसी ने सर्वानन्द जी के कान में यह बात डाल दी कि पंडित जी तुम्हारी शादी करवाना चाहते हैं। यह सुन कर सर्वानन्द जी हैरान हो गऐ तो दौड़ते दौड़ते पंडित जी के पास गऐ और बोले मुझे पता चला है कि आप मेरी शादी कराना चाहते है। नहीं करनी है मुझे शादी पंडित जी ने सर्वानन्द को

बहुत समझाया, फिर भी सर्वानन्द नहीं माना। गुसा करते हुए पंडित जी बोले में ने तुम को पाला पोसा, पढ़ाया लिखाया कि तुम मेरे बुढ़ापे की लाठी बनेगा, इस कारण मेंने तुम को यहां लाया था कि तुम मेरे लड़के बनकर रहो। यह सुन कर र्सवानन्द उदास हो गऐ और बोले पंडित जी में आप को एक लड़का ला के दूँगा जो मेरे से भी अच्छा है। में यह बात आप से स्पष्ट करना चाहता हूं कि मुझे शादी नहीं करनी है इस पर पंडित जी चुप हो गऐ। दूसरे दिन सर्वानन्द फतेहपौरा गांव गऐ और वहां से एक लड़के को लाकर पंडित जी को सोंप दिया। पंडित जी अत्यन्त प्रसन्न हुऐ और सर्वानन्द जी को आजीवन खुश रहने का आर्शवाद दिया। सर्वानन्द जी ने भी उन को धन्यवाद कहा।

सर्वानन्द जी गोसोन गोंड़ आश्रम आऐ स्वामी आत्माराम जी को प्रणाम किया, आपस में कुछ र्वातालाप हुआ। स्वामी जी ने र्सवानन्द के विषय में सुना था और उसे गोतम नाग आश्रम में भी देखा था। स्वामी जी ने उसको आश्रम में रहने की अनुमति दी और अपना शिष्य भी बना लिया। आश्रम के सारे नियम बता कर उसे उत्तरदायित्व सोंप दिया।

✱

# स्वामी लक्ष्मण जी

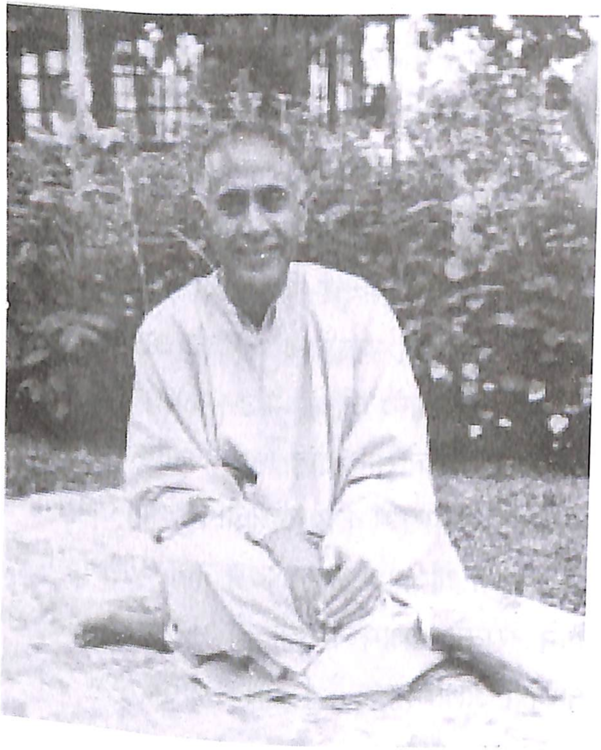

स्वामी लक्ष्मण जी भी गोसोन्य गोंड़ आश्रम आऐ। स्वामी आत्माराम जी ने आश्रम में उन के लिए एक कमरा साफ करवाया और वे उस कमरे में रहने लगे। धार्मिक किताबें पढ़ने में बढ़े मग्न व स्नेहशील और अपनी संध्या पूजा करने में व्येस्त रहते थे, वे शिव जी के उपासक थे। बहुत समय तक वे आश्रम में साधना करते रहे। वे श्रीनगर में इशबर में रहते थे और वही पर अपना आश्रम स्थापित किया। स्वामी महताब काक जी उनके गरू और स्वामी राम जी उनके

परम गरु थे। हजारों भक्त जन उन के आश्रम में आते जाते रहते थे और उन के दर्शन से सन्तुष्ट होते थे। उन्हों आत्मज्ञान और दिव्य दृष्टि का ज्ञान था। आज भी बहुत भक्त और विद्वान उन्हें हर समय याद करते हैं। अपने प्रवचनों से भक्तों को लाभान्वित करते थे। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रज़ी भाषाओं का बड़ा ज्ञान था।

एक दिन एक भक्त स्वामी जी के दर्शण के लिए उनके आश्रम में गया। जाडे का रितु था, सारा हाल भक्तों से भरा था। वह एक कोने में बेठ गया। स्वामी जी किसी विषय पर भाषण दे रहे थे। सर्दी के कारण उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि स्वामी जी क्या भोल रहे हैं। वह गर्म गर्म चाय की प्रतीक्षा कर रहा था। दस मिनट के पश्चात् स्वामी जी ने अपना व्याख्यान समाप्त किया और कहा ''जो कोई भी यहां चाय पीने के लिए आया है, कुछ सीखने के लिए नहीं आया है, उसे इस आश्रम में नहीं आना चाहये।'' उस ने अपनी गलती मान ली और मन से ही स्वामी जी से माफी माँगी। यह स्वामी जी का आत्मज्ञान और दिव्य दृष्टि थी।

✸

# स्वामी अत्माराम जी

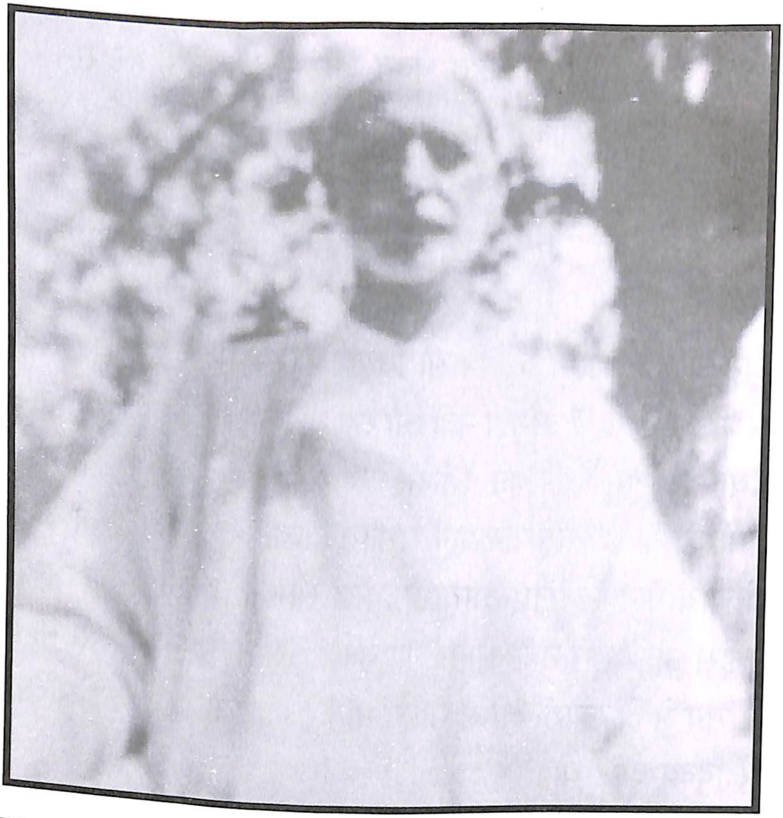

## आश्रम का विस्तार

आश्रम में एक पुरानी धर्मशाला को तोड़ कर वहां पर नयी और पक्की धर्मशाला का निर्माण किया। इस के उपरांत एक सत सगं भवन, एक लगंर और दो कुठहार जिस में आश्रम के खेतों की धान साल भर के लिए सुरक्षित रह सके बनाये गए। आत्मा राम जी ने जब नई धर्मशाला बनाने का विचार किया तो आश्रम में ही एक चीड के वृक्षे को काटने के लिए लकड़हारे को लाया ताकि उसे काट कर इस की लकड़ी से धर्मशाला के खिड़कियां और दरवाजे बन सकें। यह

वृक्ष उसी. लकड़ी से उगा था जो जीवन साहब ने जलती हुई धुनी में से एक लकड़ी निकाल के जमीन में गाड़ दी थी। अब वह एक बहुत बड़ा वृक्ष बन चुका था। जब लकड़हारे ने इस वृक्ष को काटने के लिए दो, तीन बार कुलहाड़ी मारी तो कहते हैं कि वृक्ष से खून निकलना आरम्भ हो गया, यह देंखकर सभी अचंभित हो गए। स्वामी महराज ने वॅक्ष को काटना बंद करवाया और वृक्ष की काट पर मिट्टी लगवाई। स्वामी जी की शक्ति से खून निकलना बंद करवाया इस से लोगों में इस स्थान में आसथा और बड़ गई। अगर किसी को कोई रोग होता था तो इस स्थान से थोड़ी सि मिट्टी ले कर बीमार को लगाते थे तो उसे वह रोग दूर हो जाता था परन्तु दु:ख की बात है कि एक सप्ताह के अन्दर ही वह लकड़हारा मर गया, जिस से लोगों को भी बहुत अचरज हुआ।

स्वामी जी ने आश्रम के पूर्व में 8x8 फुट का पोखर (तालाब) खुदवाया और उस में कंवल के फूल का बीज बोया, जिस में कुछ समय के पश्चात् बड़े-बड़े पत्तों के बीच (खेलवत्र), कमल के फूल खिलने लगे। हर समय प्रेमी भक्त, साधु संत उसी कमल तालाब के किनारे आसन ड़ाल कर ध्यान, समाधी लगाया करते थे। आश्रम के मुख्य द्वार के साथ गोशाला का नवीन र्निमाण हुआ। बेठक की मरम्त करवाई गई। मंदिर की साफ सफाई, व मरम्त की गई। हवन शाला को ठीक ठाक कराके उसकी लिपाई पुताई की गई। फलदार वृक्ष, फूलों की कियारयों लगवाई गई। आश्रम के साथ में 5-6 कनाल भूमि की घास कटाई करना, चिनार और दूसरे वृक्षों की देखभाल की गई। इसके अतिरिक्त बिन-बिन प्रकार की सब्जियां उगा कर आश्रम में सब्ज़ी बनाने के काम आती थी। कुवें को पूरी तरह से साफ करवाया गया।

पर गए ही नहीं। श्रीनगर निवासी भक्त ने महात्मा सर्वानन्द जी से कहा ''जब महात्मा शिव जी काक का दसवां दिन था तो हम वहां पर गऐ थे, स्वामी आत्माराम जी भी वहां पर थे, हम ने उन को प्रणाम किया और यहाँ का कुशल मंगल भी पूछा। परन्तु हैरानी की बात है हम ने उन को वहां पर देखा और आप कहते हैं कि स्वामी जी कहीं गए ही नहीं, यह तो अदभुत हो गया हम ने उसी दिन यहां आने का मन बनाया और आज यहां आ गए।''

वास्तव में स्वामी जी अपने आश्रम में ही थे परन्तु अपनी दिव्य शक्ति से सूक्ष्म शरीर में शिव जी काक के दसवें दिन में सम्मिलित हुए। यह एक बड़ी करामात थी। यह भक्त स्वामी जी से मिलने उनके कमरे में गऐ स्वामी अत्माराम जी को प्रणाम किया, वे अपने आसन पर बैठे थे। कुशल मंगल पूछा, एक दो घंटे सत संग चला सेवक ने चाय लाई, सायं काल होने लगा सभी संध्या पाठ करने के लिए अपने अपने स्थान पर गऐ। अतिथि भक्तों को बड़ा आश्चर्य हो गया तो आपस में बाते करने लगे ''स्वामी जी उच्च कोटि के महांन संत है उन को हमारा शत-शत प्रणाम, यह तो करिश्मा है, वह माता पिता धन्य है जिन्होने इनको जन्म दिया है।'' जो यह अदभुत कार्य करते है, उनके पास दिव्य शक्ति ही होती है। वे भीतर से सीधे साधे साधु लगते थे। वे लम्भा फरेन और कानों के उपर वाली टोपी पहनते थे, जब कही जाना होता था तो राम राम पट बांधते थे, सत संग करना उन का नियम था शास्त्रार्थ करने में बहुत प्रसन्न होते थे, जो भी कोई शास्त्र के हित में कुछ पूछता तो खुशी से उसकी शंका का समाधान करते और पूरा अर्थ समझाते थे।

# स्वामी नाथ जी

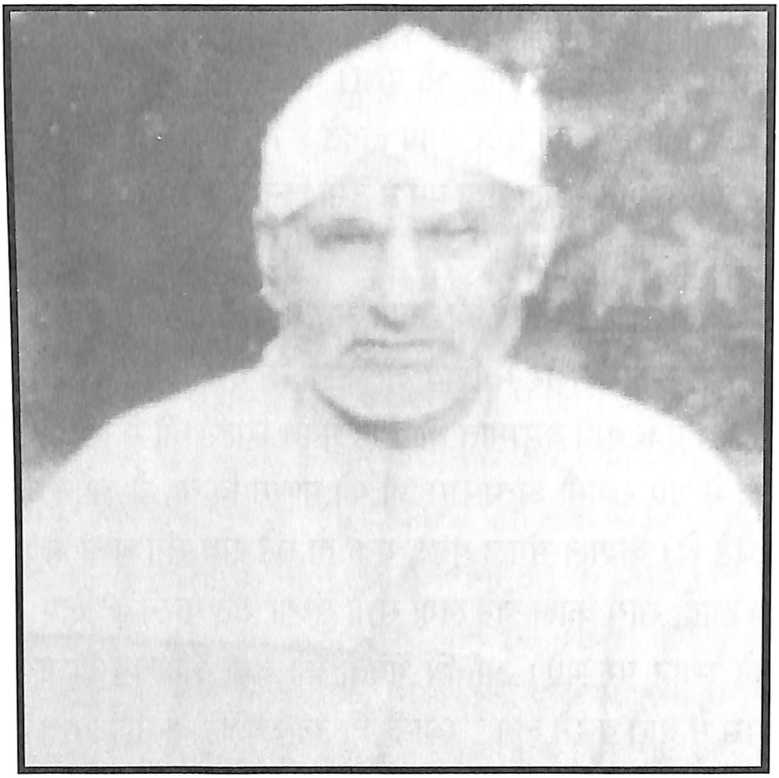

एक दिन स्वामी आत्माराम जी गोतम नाग के संत गाशकाक जी के पास गये, आदर सतकार के पश्चात सत संग हुआ , वहां पर बीस पचीस वर्ष का एक नौजवान था जिस की एक टांग कमजोर थी। इस कारण उस के हाथ में हर समय लाठी रहती थी जिस की सहायता से यह लड़का चलता था, स्वामी जी इस लड़के को अधिक समय तक देखते रहे। गाशहकाक जी ने कहाँ ''स्वामी जी क्या देखते हो, पिछले

र्कमों के अनुसार ही जन्म मिलता है। भाग्य लिखे को कौन मिटा सकता हैं। यह श्रीनगर विचार नाग के पंडित घराने का लड़का नाम है नाथ जी। साधु बनना चाहता है। अब आप इस को अपने साथ ले जाऐ वहां पर आप के काम आएगा। स्वामी जी ने कहा ''तथास्तु'' स्वामी जी वापस आते समय इस लड़के को अपने साथ आश्रम ले आए। नियम के अनुसार उपदेश दे कर इसे दूसरा शिष्य बना लिया। पटवार लेख में सर्वानन्द के साथ, नाथ जी के नाम भी पट्टे में दर्ज करवाया।

स्वामी जी की देख रेख में यह दोनों शिष्य आश्रम की देख बाल करते थे। नियम के अनुसार 4 बजे उठना, नहां-धोकर 8 बजे तक मूर्ति-पूजन, आराधना करना 8 बजे के पश्चात मसाले वाली चाय और सोतू दिया जाता था। अपने बगीचे से सब्जी काट कर पकाई जाती थी, गायों की देख बाल, उन का खाना पानी, साफ सफाई विषेशत: गौशाला की साफ सफाई पर अधिक ध्यान दिया जाता था। हर एक कमरे में अपने और अतिथियों के लिए बिस्तर था। आश्रम में खड़ाऊ ही पहननी होती थी, चमडे का जूता अन्दर लाने की अनुमति नहीं थी। किसी निर्धन को किसी चीज की आवश्यकता होती थी तो आश्रम उस की आवश्यकता पूरा करने का भरपूर प्रयास करता।

# महात्मा शंम्भूनाथ जी

एक ब्रह्मचारी महात्मा शंम्भूनाथ जी बअट पौरा शुपियन के मूल निवासी थे। शिव जी काक के दुर्गा नाग में सेवा कर थे। वे भी गोसोन गोंड़ आश्रम आया करते थे। शिव जी काक के देहांत के पश्चात वे गोसोन गोंड़ आश्रम में रहने लगे। वह बहुत गुणवान, शांत सुभाव और विश्वसनीय सेवाकार थे। स्वामी जी उस की अधिक प्रशंसा करते थे। स्वामी आत्माराम जी के र्चचे बहुत दूर-दूर तक फेलने लगे। उनकी लोकप्रियता इतनी थी कि आश्रम के आस पास के सभी गांव में यदि किसी घर में या और भी कोई विवाद होता था तो स्वामी जी उस का निशिचत रूप से निर्णय करते थे। यह हो ही नहीं सकता कि उस निर्णय का कोई विरोध करे। महात्मा प्रेमनाथ जी निवासी बहुडूरह, वेशनाथ जी अनन्तनाग, पटवारी जेयलाल राजदान - बुलबुल लंकर श्रीनगर, कंठ कौल - नई सड़क श्रीनगर और ठाकुर कौल -क्रन्डी गांव इतादि स्वामी जी के शिष्य थे। श्री मानहकाक जी फतहपुर निवासी स्वामी जी के परम मित्र और प्रिय शिष्य थे।

पुरानी सरकार बदल गई, नई सरकार ने एक हुकम से और खुश-खरीद नाम से धान मोल लेना आरम्भ किया। जमा करने वालों को कठिन सजा देने का आदेश दिया गया। किसी ने ड़ी-सी साहब से चुगली की कि स्वामी जी के पास अधिक भूमि है अपनी आवश्यकता से अदिक धान पैदा होती हे इस कारण एक दिन डी–सी साहब स्वामी जी से मिलने आऐ। उसके साथ कुछ ओर कर्मचारी भी थे। उस समय

आश्रम में खाना आरम्भ हो चुका था, स्वामी जी खाना खा रहे थे। एक सेवक ने बड़ी सी दरी निकाल के सरोवर के किनारे बिछाई। डी-सी साहब बठ गऐ और देखा कि दस पन्दरह, पुरषों ने खाना खाया और आठ दस पुरूष खाने के लिए बेठ गऐ। यहाँ का वातावर्ण देखकर वह चकित रह गऐ, इसी बीच में स्वामी जी आऐ और अपने आसन पर बेठ गऐ, एक सेवक ने हुक्का जला कर स्वामी जी को दे देया।

डी-सी साहब ने स्वामी जी को नमस्ते कहा और कहने लगे ''आपके यहाँ बहुत अतिथि आते रहते हैं क्या आपको अपने खेतों की धान पूरी होता है।'' स्वामी जी बाले ''कहाँ पूरी पड़ती है। कम ही पड़ जाता है। भकत जन आते रहते हैं वही आश्रम की आवश्यकता पूरा करते हैं।'' स्वामी जी ने सर्वानन्द जी से कहा ''चाय का प्रबन्ध करो, नमक वाली चाय बनाओ क्योंकि चीनी है नहीं, मेरे कमरे में अलमारी के उपर थोड़ा सा नाबद रखा है, उस से डी-सी साहब के लिऐ मीठी चाय बनाव।'' डी-सी साहब ने अपने एक व्यक्ति को बुलाया, और कहा एक कागज और कलम ले आव, एक और कर्मचारी जो उस के साथ था उस को कहा, एक मन चीनी का परचा बनावें मैं उस पर हस्ताक्षर कर के चपरासी को दे दों और उस को कहो कि कल एक मन खाडं लाकर स्वामी जी को सोंप दें। डी-सी साहब को कुछ देर आश्रम में रहने से अत्यन्त शांति का अनुभव हुआ और स्वामी जी की अधिक प्रशंसा करते रहे। जिस काम से डी-सी साहब वहाँ आऐ थे स्वामी जी के सामने वे कुछ भी बोल नहीं पाये,बदले में आश्रम का गुण गाण किया, स्वामी जी से आशीर्वाद मांग कर चले गऐ।

# महात्मा प्रेमनाथ जी भट्ट

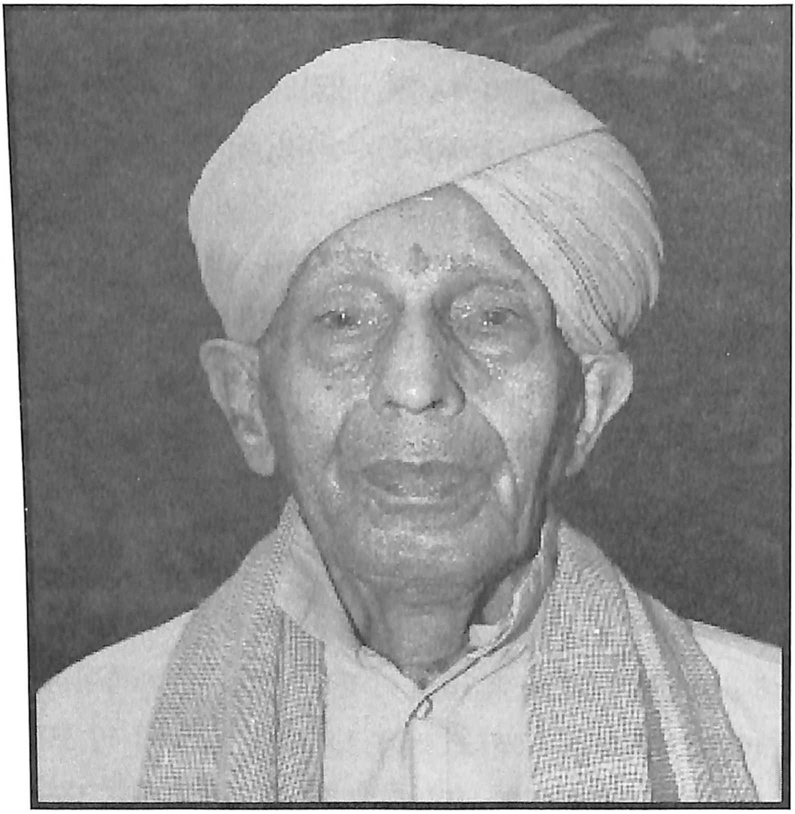

आश्रम के पूर्व में थोड़ी दूरी पर मानटह पोर गांव, दक्षिण में बडे बडे गांव जैसे सागाम, हाँगलगोड़ं, वेरीनाग, बोनहगोड़ं, पच्छिम में लुकभवन और फतेपोरा गांव है। फतेपोरा गांव वालों को इस आश्रम के साथ अधिक रुचि और आना जाना था, विशेष्तः महात्मा सर्वानन्द जी को इस कारण उन की जन्म भूमी वेसू की राह इसी गांव द्धारा जाती है फेतेहपोरा आने पर महात्मा सर्वानन्द जी का बड़ा स्वागत किया

जाता था,. वहां पर उनके बहुत भक्त थे। महात्मा सोनहकाक़ जी के समय से ही पीढ़ी दर पीढ़ी इस आश्रम से जुडे थे वहां पर एक घर में लसह भट्ट और उस का एक लड़का माधव भट्ट था। लसह भट्ट महात्मा सोनहकाक जी का उपदेशी था माधव भट्ट का लड़का, महात्मा सर्वानन्द जी का चेहला, जिस का नाम प्रेमनाथ जी है। महात्मा सर्वानंन्द जी ने इसको बहुत पहले से अपना लिया था और इसे आश्रम पर लाया करता था, फिर यह आश्रम में ही रहने लगे, स्वामी आत्मा राम जी ने इसे आश्रम में रहने की अनुमति देदी और आशीर्वाद भी दे दिया।

# स्वामी आत्माराम जी का निर्वाण

कुछ दिनों से स्वामी आत्मा राम जी का स्वस्थ ठीक नहीं था। उनकी जाँच के लिए ड़ाक्टर लाया गया। दवाइयां दी गई, परंतु कुछ सुधार नहीं हुआ। आश्रम से चार मील दूर डूरु गांव से दूसरे डाकटर को बुलाया गया, परन्तु उस से भी दर्द में कोई कमी नहीं आई।

अंत में स्वामी आत्माराम जी माहराज 'कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी 1976' प्रात: काल में परम ब्रह्म में लीन हुए। यह संसार की रीत है जिस ने जन्म लिया उसे एक दिन वापस अवश्य जाना पड़ता है। स्वामी जी के देहांत का संदेश सुनते ही हजारों लोग, भक्त, साधु संत, हिन्दू और मुस्लमान आश्रम में एकत्रित हो गऐ, सब के चहरे उरते हुऐ, और आंखें नम थी। गीता जी का पाठ आरम्भ हुआ। अन्तिम संस्कार महात्मा सर्वानन्द जी ने कर दिया। आश्रम के नियम के अनुसार तेरह दिन तक वेद हवन किया गया जिस में हजारों लोगों ने भाग लिया और स्वामी जी को श्रद्धा के फूल अर्पित किये। स्वामी जी के जाने से जो खला पैदा हुआ उस को पूर्ण करना बड़ा कठिन था फिर भी आश्रम वेसा ही चलता रहा। लोगों का आना जाना वेसे ही जारी था। सरोवर के किनारे स्वामी जी की संग मरमर की समाधि बनाई गई।

# महात्मा पृथ्वीनाथ जी

महात्मा सर्वानन्द जी ने आश्रम की भाग ड़ोर सम्भाली, आश्रम में एक छोटा सा मकान था। जिस का छत टीन की चादरों से ड़क दिया और उस के निचले मंज़िल में दो दुकानें बनाई। आश्रम के चारों ओर तार बंदी की गई। नये वृक्ष लगाऐ, जिस से आश्रम की सुन्दरता और बड गई। श्री सर्वानन्द जी ने एक और साधु कृति वाला लड़का पृथ्वी नाथ जी जो वेरीनाग बोनहगोंड़ के रागव राम का लड़का है आश्रम में

लाया। अधिक समय तक वह आश्रम में आता जाता रहा। महात्मा सर्वानन्द जी ने उसे बहुत प्यार दिया, फिर वह आश्रम में ही रहने लगा। उस समय श्री प्रेमनाथ जी अपने गरु सर्वानन्द जी से पचं दशी, तत्व बोध और आत्मा बोध पढ़ने लगे। साल में दो, तीन हवन करते ही रहते थे, सत संग हर समय चलता रहता था। एक दिन ब्रह्मचारी शेम्भू नाथ जी बीमार हो गऐ, इलाज करने से भी कोई सुधार नहीं हुआ तो उसे श्रीनगर के बडे अस्पताल में दाखिल कराया गया। उस के भाई का लड़का ओंकारनाथ जी जो अस्पताल में ही काम कर रहा था उस की भी देख बाल करता रहा। स्वामी सर्वानन्द जी और स्वामी नाथ जी ने आपस में विचार विमर्श किया कि आश्रम का उत्तरदात्वि किसे दे दें। दो चार दिन बीत जाने के पश्चात शंम्भूनाथ जी अस्पताल से वापस आऐ, सभी बहुत प्रसन हुऐ।

स्वामी सर्वानन्द जी ने पट्टा लिखने वाले को बुलाया, एक वसीयत अपने नाम और दूसरी वसीयत श्री नाथ जी के नाम बनवाई जिस में श्री शंम्भूनाथ जी को महात्मा नाथ जी और श्री प्रेमनाथ जी को स्वामी सर्वानन्द जी का उत्तरदात्वि देकर नाम दर्ज कराया। तहसीलदार अनन्तनाग के हस्ताक्षर करके जज साहब से भी हस्ताक्षर करवाये और फिर पटवार भू-लेखा में सारी चल और अचल सम्पति दर्ज करवाई। स्वामी सर्वानन्द जी की देख-रेख में आश्रम बहुत अच्छी तरह से चल रहा था। स्वामी आत्माराम जी को वैकुंठ पदारे अब दस साल हो गऐ थे।

# श्री स्वामी रामानन्द जी

श्री स्वामी रामानन्द जी जो मूलत: केरला के रहने वाले थे, भारत के भिन्न-भिन्न नगरों में तीर्थ स्थलों की यात्रा कर के अन्त में कश्मीर आए। यहाँ बहुत से र्धामिक स्थानों की यात्रा की। कशमीर में ही वह एक मित्र भक्त जो अनन्तनाग के निवासी थे, उनके यहाँ ठहरने लगे। वहां उन्होंने गोसोन गोंड़ के विषय में बहुत कुछ सुना, इस के पश्चात वे भी गोसोन गोंड़ आश्रम पर आऐ और वहां पर रहने लगे। वे देवी मां के उपासक थे और सदा भक्तों को माता के प्रति पूर्ण सर्मपित होने का उपदेश देते थे। पांच साल उस आश्रम में रहने के पश्चात वे एक दिन वहां से चले गऐ।

# स्वामी सर्वानन्द जी का निर्वाण

एक दिन सत संग के पश्चात स्वामी सर्वानन्द जी ने वर्णन किया, कल उसे वेसू गांव जाना है। वहां उस के घर की जो जमीन है वह उसे वहां के मंदिर के नाम करके उस पर बनने वाली धर्मशाला की आधार शिला रखनी है। दिन बीत गया, प्रात:काल नहा धोकर मंदिर में पूजा अर्चना की, चाय पी और वेसू के लिए प्रस्थान किया। वहां पर स्वामी जी के आगमन का उत्सुकता से प्रतीक्षा हो रही थी। वहां पहुंच कर उस के गले में फूलों की माला ड़ाला कर हादिर्क अभिनदंन किया गया। नीव पत्थर रखने के पश्चात स्वामी जी शुपयेन कस्बे के लिए चल पड़े उन को शुपयेन इस लिए जाना था क्योंकि महात्मा शंम्यूनाथ जी बहुत पहले अपने घर गऐ थे और अबतक आश्रम लोटे नहीं थे। उन को वापस लाने के लिए वहां जाना था।

जब जैनापोरा के अड़े में बस रुकी तो किसी भक्त ने स्वामी जी को देखा। बस से नीचे उतरने और अपने घर रात ठहरने के लिए विनती की। स्वामी जी मान गऐ। घर पहुंचने पर सभी अन्यतं प्रसण हुए, सत संग हुआ, कशमीर के प्रत्येक हिदूं गांव में स्वामी जी के भक्त बन गए थे। जब भी वे श्रीनगर जाते थे तो अपने भक्तों के पास ही ठहरते थे। उनके भक्तजनों में घाटी के नामवर सज्जनों में चन्द्रजू वकील- टंकीपोरा, अमरनाथ जी - सथू - बरबरशाह, कंठकौल - नई स्ड़क, ब्रज नाथ गंजू - रेनावारि इतादि। स्वामी जी उन के बड़े गुण गाण करते रहते थे, विशेषत: चन्द्रजू वकील के, जिन के घर पर साधु

जन आते रहते थे, वहां भजन कीर्तन सत संग हर समय होता ही रहता था।

स्वामी जी बहुत सीधे साधे थे। उन्होंने कमीज पाजामा नहीं पहना। वे सफेद रफल का फेरन उसके सात सफेद कपड़े का पौछ और सिर पर सफेद साफा (पकड़ी) कंधे पर एक कपड़ा और बांहर जाने के लिए चपल पहनते थे। उन को सारे साधु जन 'शोरवदेव स्वामी' कहा करते थे। एक दिन गर्मी के ऋतु में स्वामी जी काजीगुड़ से आश्रम वापस आ रहे थे। रास्ते में एक छोटी सी पहाडी पार करनी थी। शंकर पोरह गांव छोड़ कर पहाडी चड़ना आरम्भ किया, उस पार पहाड़ी के दामन में शनगरेन गांव स्थित है। वहां की लड़कियां इस पहाड़ी के उपर जलाने के लिए लकड़ियां एकत्रित करती रहती थीं। पहाड़ी चढ़ते स्वामी जी को अत्यन्त गर्मी का आबास हुआ। उस ने अपना फेरन निकाल कर कंधे पर रख कर फिर चढ़ाई चड़ना आरम्भ किया। लकड़ियां एकत्रित करते करते लडकियों की दृष्टि इन पर पड़ी कद से छोटे, और स्वस्थ से मोटे थे। लड़कियां इन्हें निकट आते देख कर घबरा गई और लकड़ियां वहीं छोड़ कर अपने गांव पहंचते ही चिल्लाई। उन की चीखें सुन कर सारा गांव उमड़ आया। गांव वाले इस अनजान पुरुष को देख कर चकित रह गऐ, वहां पर एक ग्राहक जो इस आश्रम से अखरोट, और दूसरे फल खरीदता था उस ने इन्हे पहचान लिया और बोला "अरे यह तो गोसोन गोंड़ के साधु जी है।" तो स्वामी जी ने फेरन पहन लिया। स्वामी जी एक सहज और सरल व्यक्ति थे। चार धाम की यात्रा की थी उस के लिए उन्होंने अपने लंगर

के बर्तन सामान, सेवक और कुछ साधु जन साथ लिए थे। बाहर किसी का कुछ भी नहीं खाते थे।

जैनपोरा में सत संग के पश्चात भोजन किया। भोजन करने के तत्पश्चात जब स्वामी जी ने हाथ धोया और लोटा भक्त की माता जी को देने लगे तो लोटा उन के हाथ से छुट गया और अचेत हो गऐ।ड़ॉक्टर को बुलाया निरीक्षण कर के डाक्टर ने बोला, आप इन्हें अस्पताल ले जाऐ। टेकसी लाइ शीध्रता से अस्पताल पहुंचाया जहां स्वामी जी को दाखिल किया गया। निरीक्षण कर के उन्हें दवाई दी, इन्जंक्शन लगाया और कहा यद्यपि इन्हें एक घंटे तक होश आया तो ठीक हो सकते हैं। ड़ॉक्टर साहब स्वामी जी को जानते थे, दो घंटे के पश्चात भी उन की दश में कोई सुधार नहीं आया, ड़ॉक्टर साहब ने अपने किसी व्यकित को आश्रम भेजा और उस को कहा, आश्रम में स्वामी जी का शिष्य महात्मा प्रेमनाथ है। उस को बोलना स्वामी जी अस्पताल में है। अस्पताल पहुँच कर महात्मा प्रेमनाथ जी ने गुरु महराज के दर्शन कर के उन के चरणों में हाथ लगाए चरण बहुत ठंड़े हो गए थे।

स्वामी जी ने आंखे खोल कर प्रेमनाथ जी की और देखा और कुछ कहने लगे पर शक्ति कम होने के पर बोल न सके, प्रेम नाथ जी स्वामी जी को आश्रम चलने के लिए कहा। डाक्टर साहब से विचार विर्मश करके अस्पताल की गाड़ी लाकर एक बजे आश्रम पहुँचे। प्रेम नाथ जी ने स्वामी जी से कहा ''देखो आप आश्रम वापस पहुँच गऐ।'' स्वामी जी ने आँखें खोली, सारे आश्रम को देख कर मंदिर की तरफ

देखते रहे। उनके मुख में गंगा जल डाला गया। आँखें बंद कर के अंतिम सांस ली। 'वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी' के तीन बजे स्वामी जी का निर्वाण हुआ। गीता पाठ आरम्भ हुआ, सभी को स्वामी जी का वैकुंठ परदाने का समाचार मिला, सारे संत साधु, भक्त जन और आस पास के पुरुष, महिलाए आश्रम में एकत्रित हुऐ। सभी के चहरे शोकाकुल थे। महात्मा नाथ जी श्रीनगर में थे। उनको बुलावा भेजा गया। दर्शनों के लिए स्वामी जी को सतसंग भवन में रखा। संध्या डलने से पहले शिष्य महात्मा प्रेम नाथ जी ने उनका विधिपूर्वक, दाह संस्कार किया। परम्परा के अनुसार 13 दिनों तक वेद हवन चलता रहा। आश्रम में सभी को स्वर्गीय स्र्वानन्द जी की कमी का आभास हुआ। महात्मा नाथ जी को उनकी गद्दी पर बिठाया गया। एक मास बीत जाने के पश्चात् स्वर्गीय आत्मा राम जी की मसाधि के चरणों में स्वर्गीय सर्वानन्द की भी समाधि संग मरमर के पत्थरों से बनाई गई।

✸

# महात्मा प्रेम नाथ पंडित

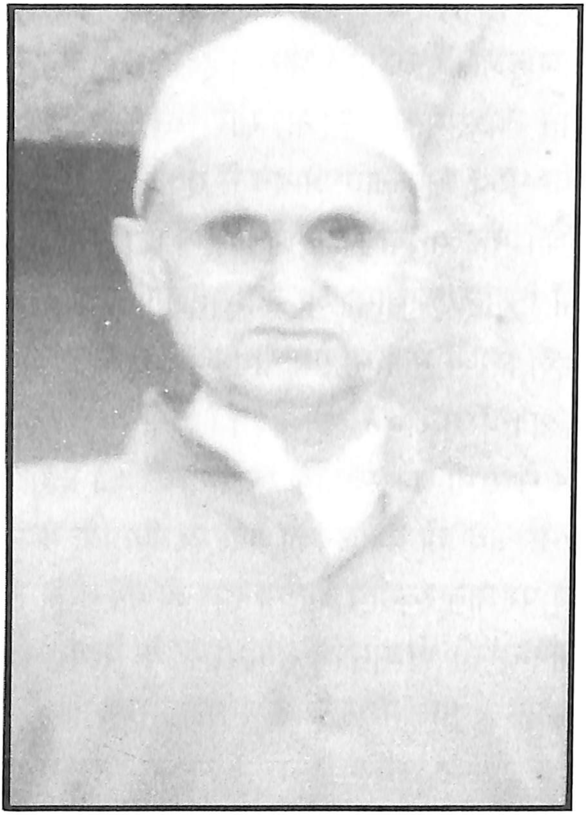

महात्मा प्रेम नाथ जी पंड़ित के पिता जी का नाम श्री कंठ राम जी पंड़ित था। वे लेवडुरु काजी गोंड़ के रहने वाले थे। वे भी बड़े शांत स्वभाव वाले महात्मा थे। दूसरे महात्माओं से उन्हें स्नेह था। आश्रम के हर एक काम में वे सहायता करते थे। महात्मा प्रेम नाथ जी और महात्मा पृथ्वी नाथ जी से वे परस्पर आश्रम की भलाई की बातें करते रहते थे। उन्होंने अधिक समय तक उस आश्रम में साधना की, और स्वामी जी के आशीर्वाद से आध्यात्मिक उन्नति पाई।

पंड़ित केशवनाथ जी अनन्तनाग से संबंध रखते थे और वहां पर एक दुकान चलाते थे। वे अनन्तनाग को छोड़कर गोसोन्य गोंड़ गाँव में रहने लगे और वहां पर भी एक दुकान चला रहे थे। वे एक सीधे साधे मनुष्य थे। परन्तु भगवान भक्ति भी साथ-साथ करते थे। स्वामी आत्माराम जी की चर्चा बहुत दूर-दूर तक फेली थी। एक दिन स्वामी जी के शर्ण में समर्पण किया और उनका आर्शीवाद पाकर धन्य हुए।

## महात्मा नाथ जी का निर्वाण

महात्मा नाथ जी की देख रेख में आश्रम चलता रहा। महात्मा शम्भूनाथ जी फिर बीमार पड़ गऐ। आश्रम में इलाज हुआ परन्तु कुछ सुधार नहीं हुआ तो श्रीनगर के मुख्य अस्पताल में फिर दाखिल होना पड़ा। उस के भाई का लड़का जो अस्पताल में ही काम कर रहा था उस की भी साथ में देख बाल करता था। वहाँ पर भी बहुत उपचार किया गया। डॉक्टरों ने उसे रोगमुक्त करने का बड़ा प्रयास किया, परन्तु बीमारी का कोई सुधर नहीं हुआ। अन्त में महात्मा शम्भूनाथ जी भगवान को प्यारे हो गऐ। वहाँ से उस को अपनी जन्म भूमि शुपयन ले जाया गया और वहाँ के प्रसिद्ध कपाल मोचन तीर्थ के पास अन्तिम संस्कार किया गया। उनकी याद आश्रम में सभी जन को आती रही क्योंकि वे जन कल्यान कार्यक्रमों में भरपूर योगदान देते थे।

स्वामी नाथ जी ने शिष्य शम्भूनाथ जी के बदले श्री पृथ्वी नाथ

जी को अपना शिष्य बना लिया और स्थिरता से विलेख (वसीयत) पृथ्वी नाथ जी के नाम कर दिया और सरकारी रिकार्ड में प्रमाणित कर दिया। पृथ्वी नाथ जी बहुत सालों से आश्रम के एक अच्छे साधु रहे हैं। आश्रम की अच्छी देखबाल करते रहे। एक दिन स्वामी नाथ जी बीमार हो गऐ तो उन्हें अनन्तनाग के अस्पताल में दाखिल हुए। कुछ दिन अस्पताल में रहने से बीमारी में सुधार नहीं हुआ तो आश्रम वापस आगऐ, प्रन्तु डॉक्टर साहब ने कहा कि इनको आपरेशन की आवशयकता है।

एक दिन महात्मा नाथ जी की बहन का लड़का श्री अमर नाथ जी बान आश्रम पर आया। बात-चीत के दौरान नाथ जी की बात छिडी तो अमर नाथ जी ने बताया कि वह उन्हें श्रीनगर में आपरेशन करवाएगें। महात्मा नाथ जी सहमत हो गये। दूसरे दिन अमर नाथ जी, महात्मा नाथ जी और महात्मा पृथ्वी नाथ जी ने श्रीनगर के लिए प्रस्थान किया। बान साहब ने दो दिन अपने घर पर रख कर दूसरे दिन अस्पताल में दाखिल करवाया। डॉक्टरों ने निरीक्षण कर के अपनी र्कायविधि पूरी कर के आपरेशन किया। परन्तु दस पन्ददरह मिन्ट में ही उनका स्वास्थ गिर गया और परलोक सुधार गऐ। महात्मा जी को वापस आश्रम लाया गया, श्रीनगर से भी बहुत लोग साथ आ गऐ। सभी को महात्मा जी के देहांत का पता चला। उस दिन ‘‘ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चोर्तुदशी‘‘ थी। रात अपार दुख में बीत गई, भक्त जन, साधु, संत, सब आश्रम में एकत्र हो गऐ, सभों के चहरे उतरे हुऐ थे। दूसरे दिन 2 बजे महात्मा पृथ्वी नाथ जी ने उनका अन्तिम संस्कार कर दिया। गीता

पाठ और तेरह दिन तक हवन चलता रहा। उनकी भी समाधि सरोवर के किनारे दूसरे समाधियों के साथ संग मरमर के पत्थरों की बनाई गई। आज भी तीनों समाधियाँ वहाँ पर स्थित है।

## आश्रम का संचालन

महात्मा प्रेम नाथ जी और महात्मापृथ्वी नाथ जी ने साथ ही साथ आश्रम की देख बाल में लगे रहे। अतिथि सेवा करना अपना धर्म मानते थे। स्वर्गीय आत्मा राम जी के दिखाये मार्ग पर चलते रहे। साफ सफाई, फूलों के क्यारियों सब्ज़ियों के बाग और लंगर की देख-रेख समय पर होता था। साल में 3-4 हवन रचे जाते थे। कुछ निर्माण और सुधार का काम भी होता रहा। कम से कम सौ जनों के लिए खाना पीना, रहने का स्थान बिस्तर और बड़े व छोटे बर्तन, सबका प्रबन्ध था। आस पास के गाँव में जब भी किसी निंधन को किसी चीज़ की कमी का अनुभव होता था तो आश्रम उसकी आवश्यकता पूरी करता था। वे भी आश्रम का बड़ा सम्मान करते थे। 1989 ई० में वो धान आश्रम के कुठहारों में रखी थी, वह वहाँ के धनहींनों में बांट दी गई।

# कशमीर से विस्थापन

कशमीर में 1990 ई० में जो परिस्थितियाँ हुई, उसे सभों के दिलों को हिलाकर् रख दिया। लोग बड़ी गम्भीर परिस्थितियों में रह् रहे थे। हर समय हर स्थान, मार दाड़ लूट मार आग जनी, बम धमाके, खून खाराबे से सभों की आँखें व्यथा और वेदना से दु:खी थी। दिन ब दिन परिस्थितियाँ अधिक कष्टकारी कर दिए गऐ कि कशमीर की हिन्दू आबादी को अपने घर भार, जमीन जायदाद को छोड़कर देश के दूसरे नगरों में शरण लेनी पड़ी। अपने ही देश में रिफयूजी बन गये। महात्मा पृथ्वी नाथ जी का स्वास्थ अयोग्य होने से वे इलाज के लिए चंदी गड़ चले गऐ। मंदिर, मकान, धर्म शालाएं जलाई गई। 1990 ई० की शिवरात्रि के पश्चात् परिस्थितियाँ सब से अधिक विनाशकारी हो गई। हिन्दओं साधु संतों को निशाना बनाया जाने लगा। महात्मा प्रम नाथ जी ने वहाँ पर एक पंड़ित जी और एक मुस्लिम भाई को आश्रम का भार सोंपकर अप्रेल 1990 ई० को जम्मू के लिए प्रस्थान किया।

महात्मा प्रेम नाथ जी जम्मू में अपने भक्तों के पास रहे, यह विचार करते हुऐ कि एक दिन कशमीर में परिस्थितियाँ ठीक हो कर तो वे कशमीर में अपने आश्रम वापस जाएँगे। दिन, महीने, साल बीत गऐ। परिस्थितियों में कोई सुधार नहीं हुआ। खराबी ही होती गई। 1995 ई० में गोसोन्य गोंड़ आश्रम को जलाया गया, महात्मा जी को आश्रम वापस जाने की जो आशा थी वह समाप्त हो गई। दोनों महात्माओं और भक्त जनों ने बड़ी परिश्रम करके आश्रम जलने का मुवाजा (काम्पिन्सेशन) के लिए सरकार से सर्म्पक किंया। बहुत समय बीत जाने के पश्चात रिलीफ कमेशनर के द्वारा मात्र दो लाख रूपये की सहायता मजूर हुआ।

# बोड़ी जम्मू आश्रम

समय व्यतीत होने के साथ-साथ महात्मा प्रेम नाथ जी और महात्मा पृथ्वी नाथ जी के मऩ में विचार आया कि क्यों न जम्मू में भी एक आश्रम बनाया जाऐ। उन्होंने अपने भक्तों से विचार विर्मष किया और यह बात सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई कि आश्रम बनाने के लिए जमीन खरीदी जाऐ। कई स्थानों पर भूमि देखी परन्तु आश्रम के लिए भूमि अनुकूल नहीं मिली। भूमि की तलाश में तिल्लू तालाब बोड़ी की ओर आगऐ तो तुमाल बोड़ी में घौमनासा जाने वाली सड़क के साथ 18 मरले की भूमि खरीदी और उस को आश्रम के नाम पर पंजीकृत कर लिया।

'कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी' को गरु महाराज आत्माराम जी का वार्षिक यज्ञ होता है। उस दिन ग्यारह नवम्बर 1997 आत्मा राम जी आश्रम गोसोन्य गोंड़ की शाखा लक्ष्मी विहार तुमाल बोड़ी जम्मू में आश्रम की आधार शिला रखी। अपने भक्तों के प्रेम भाव से इस नये आश्रम पर एक वेद हवन रचाया गया। जिस में बहुत से लोगों ने सम्मिलित हुए। पूर्ण आहुति के पश्चात् प्रसाद वितरण हुआ।

पहले अंश में इस आश्रम के लिए दो कमरे और एक रसोई बनाई गई। इन दो कमरों में यह दो महात्मा रहते हैं। इन दो कमरों के आगे शिव जी का एक मंदिर बनाया। इसके पश्चात् दो कमरों के उपर दूसरी मंजिल पर सतसंग भवन बनाया गया। इन कमरों के साथ में एक छोटा सा हाल, जिस के उपर भी कुछ समय के पश्चात् दूसरी

मंजिल बनाई गई। आश्रम के मुख्य द्वार के सीध में एक यज्ञ शाला और उस के साथ में एक बड़ा सा लंगर का निर्माण हुआ। मध्य में एक छोटा सा बगीचा है। हर रविवार को यहाँ पर एक बजे से छे बजे तक सतसंग, भजन कीर्तन होता रहता है। हर साल स्वामी आत्मा राम जी, स्वामी सर्वानन्द जी और स्वामी नाथ जी के अंतर ध्यान दिवस पर हवन किया जाता है। जिस में पूर्ण आहुति के पश्चात् जनता में प्रसाध वितरण होता है।

इस आश्रम को बनाने में महात्मा प्रेमनाथ जी और महात्मा पृथ्वी नाथ जी का बहुत बड़ा योगदान हे। इनकी अनथक परिश्रम से यह आश्रम बना। प्रशासन की सहायता के अतिरिक्त इन्होंने अपना धन भी इस आश्रम को बनाने में लगाऐ। इनके अतिरिक्त श्री शिवनाथ जी भट्ट, श्री जानकी नाथ जी कादंरू, श्री जवाहिर लाल कौल, श्री हरि कृष्ण शाह और श्री रतन लाल पंडिता का भी योगदान रहा। इन दो महात्मओं के बहुत से भक्त जन हैं जो आश्रम में आकर इनकी सेवा करते हैं। इन सेवा कारों में श्री कृष्ण जी पंड़िता, डा० आर.एल.भट्ट, श्री महाराज कृष्ण भट्ट, श्री अशोक कुमार रैणा, श्री संजय बाली, श्री विनोद जी पंड़िता, श्री अशोक कुमार भट्ट हैं। श्री पवन जी और श्री पिंटू जी भी आश्रम सेवा में प्रमुख रहे हैं। जो हर समय इनका ध्यान बड़ी श्रद्धा से रखते हैं और आश्रम की देख बाल में भी कोई कसर बाकी नहीं रखते। श्री मोती लाल जी ब्रह्मचारी भी पहले से इस आश्रम में आते रहते हैं। श्री वेषनाथ जी पंडिता और उन के बेटे श्री मखन लाल पंडिता बनतालाब निवासी भी इस आश्रम से जुडे हुऐ हैं।

# स्वामी आत्माराम मेमोरियल ट्रस्ट

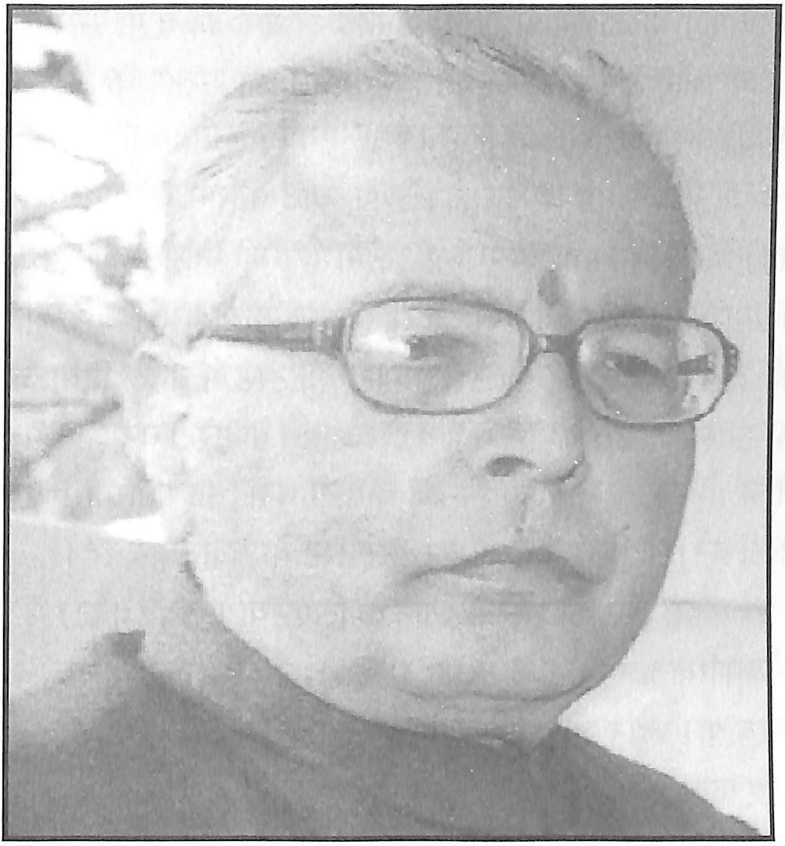

श्री शिवनाथ जी भट्ट के विलक्षण नेतृत्व में स्वामी आत्माराम जी आश्रम के लिए बीस सदस्यों की प्रबन्धक समिति का गठन हुआ। इस समिति के प्रदान श्री शिवनाथ जी भट्ट चुने गए। कशमीर में गोसोन्य गोंड़ जाकर वहाँ की परिस्थिति जान लेना इसी समिति को सोंप दिया गया। प्रदान जी महात्मा पृथ्वी नाथ जी और दो सदस्य

कशमीर में गोसोन्य गोंड़ आश्रम पर गऐ। आश्रम में दशा दयनीय थी। पेड़ कोटे गऐ थे, धर्म शालाएँ जलाई गई थी, यह सब देख कर वे अनन्तनाग के डी-सी से मिले। उनको आश्रम की दशा से अवगत कराया और उन से प्रार्थना की कि आश्रम की सुरक्षा के लिए चार दीवारी कराई जाऐ।

कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात आश्रम की एक सभा में यह निर्णय किया गया कि स्वामी आत्मा राम जी आश्रम का एक ट्रस्ट बनाया जाए। सर्व सम्मति से यह सुनिश्चित किया गया कि 20 सदस्य की जो कमीटी बनाई गई। उस कमीटी को ट्रस्ट में बदल दिया जाऐ। 20 सदस्य जो उस कमीटी में हैं वे इस आश्रम के ट्रस्टी बने। 20 सदस्य में से 10 ट्रस्टयों की एक निर्माण कमीटी बनाई गई और 10 सदस्य ट्रस्टी बने। श्री शिव नाथ जी बट उस ट्रस्ट के प्रदान बने रहे।

इस ट्रस्ट को कानूनी बनाने के लिए न्यायालय (कोंट) में सारे औपचारिकता पूरा कर के 28 फरवरी 2007 ई० इस ट्रस्ट का पंजीकरण करवाया। प्रदान जी की देख-रेख में यह ट्रस्ट आश्रम की भलाई के लिए काम कर रहा है।

2008 ई० में स्वामी आत्मा राम जी ट्रस्ट और आल पाटी माइग्रेंट कोआड़िनेशन कमीटी ने मिलकर गोसोन्य गोंड़ कश्मीर में जाकर एक महा यज्ञ रचाया, जिस में वादी और आश्रम के आस-पास रहने वाले हिन्दू जनता भी सम्मिलित हुई और जम्मू से भी बहुत से भक्त हवन के दिन आश्रम पर गऐ थे। उस दिन आश्रम पर कई वर्षों के पश्चात् जोश-खरोश देखने को मिला। मुसलिक भाइयों ने भी उस

समय़ बड़ा स्वागत किया। पुर्ण आहुति के तत्पश्चात ़सभों ने प्रसाद किया।

समय व्यतीत होता गया। आश्रम के प्रदान जी श्री शिव नाथ जी भट्ट रोग ग्रस्थ हुए और उनका असमय देहान्त हो गया। आश्रम में एक सभा का आयोजन किया गया। जिस में उनकी याद में 2 मिनट का मौन रख गया और उनके आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की। कुछ दिन पश्चात एक सभा में आश्रम के नये प्रदान चुन्ने के लिए बैठक बुलाई गई। महात्मा प्रेम नाथ जी ने डा० आर एल भट्ट का प्रसताव रखा, तो सब सदस्यों ने उसका अभिनंदन किया और सर्व समति से डा० आर एल भट्ट नऐ प्रदान चुन लिए गऐ। उनके कार्यभार संभालने के बाद विविध कार्यक्रमों का आयोजन विधिवत होने लगा।

# भविष्य की कल्पना

स्वामी आत्माराम जी ट्रस्ट बोड़ी जम्मू के आश्रम में हर महीने एक सभा होती रहती है जिस में आश्रम के कल्याण के लिए चर्चा की जाती है। मंदिर में आने वाले श्रद्धालओं की सुविधा, आश्रम की साफ सफाई और दूसरे कार्य प्रबन्ध करने का ध्यान रखा जाता है। समय समय पर आश्रम में बिजली और पानी की देख-रेख भी की जाती है।

फरवरी महीने 2014 की एक सभा में यह निर्णय लिया गया कि आश्रम के प्रवेश द्वार से लेकर लंगर के पिछले दीवार तक उपर दूसरी मंजिल पर एक कमरा, दो स्नान ग्रह और एक बड़ा सा हाल बनाया जाएगा। इस के अतिरिक्त आश्रम के परिसर में एक कोने से उस नये भवन में जाने के लिए एक और सीड़ी बनाने का विचार है। पुराने भवन पर जाने के लिए पहले से ही एक सीड़ी बनी हुई है।

स्वामी आत्मा जी के आर्शीवाद से यह सब कार्य दो साल के अंत तक पूरा होने की संभावाना है। लंगर और यज्ञ शाला में दीवारे ऊँचा करने के अतिरिक्त इन दोनों कमरों में सीमंट का फर्श लगाने का विचार है। मंदिर के साथ वाले हाल की खिड़कियों में शीशें लगवाने और नीचे वाले स्नान ग्रह और लेट्रीन में टायल लगवाने की योजना है। इसके अतिरिक्त जहाँ कही भी आश्रम की दीवारें अंदर या भीतर सीमेंट के बिना है वहाँ पर सीमेंट किया जाएगा। एक छोटा सा स्टिोर बनाने का विचार भी है। आश्रम की सुन्दरता बनाऐ रखने के लिए परिसर को घास और फूलों की क्यारियों से एक अच्छा लान बनाया जाएगा।

ट्रस्ट ने आजतक बहुत से छोटे मोटे काम किये हैं। आरंभ में पानी की कमी को दूर करने के लिए परिसर में भूमि के बीच पानी एकत्र करने के लिए टेंकी बनवाई गई। भविष्य के लिए भी यह ट्रस्ट आश्रम की भलाई के लिए काम करता रहेगा।

# महात्मा पृथ्वी नाथ जी का निरवाण

महात्मा प्रमनाथ जी और महात्मा पृथ्वी नाथ जी की निगरानी में स्वामी आत्मा राम का ट्रस्ट बड़ी अच्छी तरह से काम कर रहा है। ट्रस्ट के प्रधान को ट्रस्टयों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। आश्रम के आस पास जितने भी घर हैं उन सब का भी सहयोग आश्रम को मिल रहा है। ट्रस्ट हर वक्त उन के काम काज को सराहता है और ट्रस्ट उन सब का आभारी है। स्वामी आत्मा राम जी की कृपा हम पर बनी रही तो ये ट्रस्ट आगे भी आश्रम की भलाई के लिए काम करता रहेगा।

साल 2012 के फरवरी महीने में महात्मा प्रमनाथ जी की सेहत बिगड गई। उन के भक्तजनों ने उन की बहुत सेवा की। महात्मा पृथ्वी नाथ जी उन का बहुत ख्याल रखते थे। बहुत से डाक्टर भी आश्रम पर उन के इलाज हेतु भुलाये गये। जो भी दवाई वो लिख कर देते महात्मा जी को पिलाते रहे। कुछ समय गुजर जाने के बाद भी उनका खास सुधार नहीं हुआ। दूसरे डाक्टरों से सलाह मशवरा करना पड़ा, उन्होंने महात्मा जी को आप्रेशन कराने की सलाह दी। महात्मा जी आप्रेशन केलिए राजी नहीं हुये। चूंकि उनको आप्रेशन कराना जरूरी था, बड़ी जिदोजहद के बाद महात्माजी आप्रेशन के लिए राजी होगये और एक अच्छे प्रावेट नरसिंगहोम में उनका आप्रेशन करवाया। ये सारा काम ट्रस्ट ने ही किया।

साल 2013 में महात्मा पृथ्वी नाथ जी की सहत खराब होगई। वो डाक्टर से सलाह मशवरा के बाद बहुत वक्त से दवायाँ लेते रहें। लेकिन कुछ ज़्यादा सुधार नहीं हुआ। डाक्टर साहब ने उनको चंदीघढ़ पी.जी.

हस्पताल जाने का मशवरा दिया। अगस्त 2013 में पृथ्वी नाथ जी चंदीघढ़ चले गये। वहाँ पर एक्सरे, अलटरासऊंड़, खून के टेस्ट और अन्य टेस्ट किये गये। उनको आप्रेशन करना पड़ा। आप्रेशन के दो दिन बाद उनकी हालत खराब हुई और "13 अक्तूबर 2013 आश्रिव शुक्ल पक्ष नवमी" सुबह उन्होंने वहाँ पर परलोक सुधार गए। बोड़ी आश्रम जब यह समाचार आया तो सब लोग निराश होगये। आश्रम में लोग इक्ठा होने शरू होगये। स्वर्गीय महात्मा जी की इच्छा के अनुसार उनका पार्थीव शरीर चंदीघड़ से रात साढ़े ग्यारह बजे बोड़ी आश्रम पहुँच गया। बहुत से लोग जमा होगये। सब की आँखें पुरनम थीं। महात्मा प्रेमनाथ जी को महात्मा पृथ्वी नाथ जी का स्वर्गवास होने से बड़ा जटका लगा। उनको महात्मा पृथ्वी नाथ जी से बहुत लगाव और प्रेम भाव था। ऐसा होता भी क्यों नहीं जो दोनों बच्चपन से अबतक आश्रम में इक्ठे रहते आये थे।

महात्मा पृथ्वी नाथ जी का शव रात भर आश्रम में रखा गया। गीता जी का पाठ चलता रहा और सवेरे उनके दाह संस्कार का सारा इंतिजाम कर लिया गया। उनकी अंतिम यात्रा में उनके भक्त, आश्रम के आस पड़ोस के बहुत सारे लोग, उन के सगे सम्भंधी और ट्रस्ट के सारे सद्दस्य उनके अंतम संस्कार में शामिल थे। उनके सगे संबधी तैरा दिन तक आश्रम में ही रहे। आश्रम की परंपरा के मुताबिक तैरह दिन वैद हवन किया गया। जिस में सभी भक्त जन शामिल हुए और दिन के तीन बजे प्रसाद वितरण किया गया। ये सब काम आश्रम के ट्रस्ट ने इंजाम दिया।

सब ट्रस्टी अपने दिल की गहरायों से भगवान जी से प्रार्थना करते हैं कि स्व महात्मा पृथ्वी नाथ जी को मोक्ष प्रधान करें।

# स्वामी आत्मा राम जी ट्रस्ट 28 फरवरी 2007 में पंजीकरण हुआ

**अ इस ट्रस्ट के निर्माण कमीटी यह है :**

1. **प्रधान** श्री शिवनाथ जी बट्ट पिताजी का नाम श्री केशव नाथ भट्ट निवासी दमहाल हांजीपोरा कश्मीर हाल तुमाल बोड़ी जम्मू।
2. **उप प्रधान** श्री अर्जन नाथ हांगलू पिताजी का नाम श्री नाथजी निवासी हांगलगोंड कश्मीर हाल उदयवाला बोड़ी जम्मू।
3. **सेक्रेटरी** श्री कृष्ण जी पंडिता पिताजी का नाम श्री गोपी नाथ पंड़िता निवासी फतेपोरा कश्मीर हाल सरस्वती विहार बोड़ी जम्मू।
4. **जोइंट सेक्रेटरी** श्री पवन जी पंडिता पिताजी का नाम श्री ब्रजनाथ पंडिता निवासी टंकीपोरा श्रीनगर कश्मीर हाल आनन्द नगर बोड़ी जम्मू।
5. **खज़ानची** श्री अशोक कुमार कानदरू पिताजी का नाम श्री जानकी नाथ कानदरू निवासी अनन्तनाग कश्मीर हाल तुमाल बोड़ी जम्मू।
6. **एकाउटेंट** श्री रतन लाल पंडिता पिताजी का नाम महादेव राम पंडिता निवासी मांटापोरा कश्मीर हाल मुठ्ठी जम्मू।
7. **ऑर्गनाइज़र** श्री जवाहर लाल कौल पिताजी का नाम श्री महादेव राम कौल निवासी लुकभवन कश्मीर हाल बोड़ी जम्मू।

## ब ट्रस्ट के अन्य सदस्य

श्री लस्से भट्ट पिताजी का नाम लक्ष्मन भट्ट निवासी सरस्वती विहार बोड़ी जम्मू।

श्री कुमार जी रैणा पिताजी का नाम श्री जानकी नाथ रैणा निवासी तुमाल बोड़ी जम्मू।

श्री वेदलाल भट्ट पिताजी का नाम मान भट्ट निवासी उदय वाला बोड़ी जम्मू।

श्री बदरीनाथ पंड़िता पिताजी का नाम श्री शम्भू नाथ पंड़िता निवासी बोड़ी जम्मू।

श्री संजय कुमार बाली पिताजी का नाम श्री मनोहर नाथ बाली निवासी तुमाल बोड़ी जम्मू।

श्री महाराज कृष्ण भट्ट पिताजी का नाम श्री शम्भू नाथ भट्ट निवासी तुमाल बोड़ी जम्मू।

श्री अशोक जी पिताजी का नाम वेद लाल निवासी तुमाल बोड़ी जम्मू।

श्री नना जी पिताजी का नाम जय लाल निवासी बोड़ी जम्मू।

श्री साहिल दर पिताजी का नाम जवाहिर लाल दर निवासी तुमाल बोड़ी जम्मू।

श्री आदित्य कौल पिताजी का नाम शुबन जी कौल निवासी तुमाल बोड़ी जम्मू।

श्री दारिका नाथ जी पिताजी का नाम सूरज राम भट्ट निवासी किलम कश्मीर हाल उदयवाला बोड़ी जम्मू।

श्री अमर नाथ कौल पिताजी का नाम सोन कौल निवासी रेनावारी कश्मीर हाल बोड़ी जम्मू।

श्री जवाहिर लाल पिताजी का नाम महीश्वर नाथ निवासी बोड़ी जम्मू।

श्री सूमनाथ कौल पिताजी का नाम रोगनाथ निवासी बोड़ी जम्मू।

# स्वामी आत्मा राम जी ट्रस्ट
# की नई ऐकज़िक्यूटिव बाडी - मई 2010

1. **प्रधान** श्री शिवनाथ जी बट्ट के स्वर्गवास होने से यह स्थान रिक्षत हो गया। महात्मा प्रेमनाथ जी और महात्मा पृथ्वीनाथ जी के आग्रह पर ट्रस्ट ने उनके सुपुत्र डॉ. आर एल भट्ट को सर्वसहमती से नया प्रधान नियुकत किया।
2. **उप प्रधान** श्री अर्जन नाथ हांगलू
3. **सेक्रेटरी** श्री कृष्ण जी पंडिता
4. **जोइंट सेक्रेटरी** श्री पवन जी पंडिता
5. **खज़ानची** श्री अशोक कुमार कानदरू
6. **सहायक** श्री संजय कुमार बाली
7. **एकाउटेंट** श्री रतन लाल पंडिता
8. **सहायक** श्री महाराज कृष्ण भट्ट
9. **ऑर्गनाइज़र** श्री जवाहर लाल कौल
10. **सहायक** श्री अशोक कुमार रैणा

## ट्रस्ट के ऐकज़िक्यूटिव सदस्य

श्री पिनटू जी
श्री कुमार जी
श्री मनू जी
श्री अशोक जी अम्बरदार

# ओम शांति

| | | |
|---|---|---|
| अर्पण | : | समाज के लिए त्याग करना अर्पण कहलाता है। |
| तर्पण | : | माता पिता के लिए त्याग करना तर्पण कहलाता है। |
| समर्पण | : | भगवान के लिए त्याग करना समर्पण कहलाता है। |

**असतो मा सद्गमय**
**थमसो मा ज्योतिर्गमय**
**मृत्योर मा अमृत गमय**
**ओम शान्ति शान्ति शान्ति**

**नोट:**

हम अपने हिन्दु भाइयों को यह सूचना देना चाहते हैं यदि कोई हवन या अपने बच्चों का यज्ञोपवीत करना चाहता है, तो स्वामी आत्मा राम जी के आश्रम लक्ष्मी विहार तुमाल बोड़ी जम्मू में रजस्ट्रशेण कर के यह पावन कार्य कर सकते है। इस के लिए स्वामी आत्मा राम जी आश्रम से संपर्क करें।

* * *

स्वामी सर्वानन्द जी

स्वामी नाथ जी

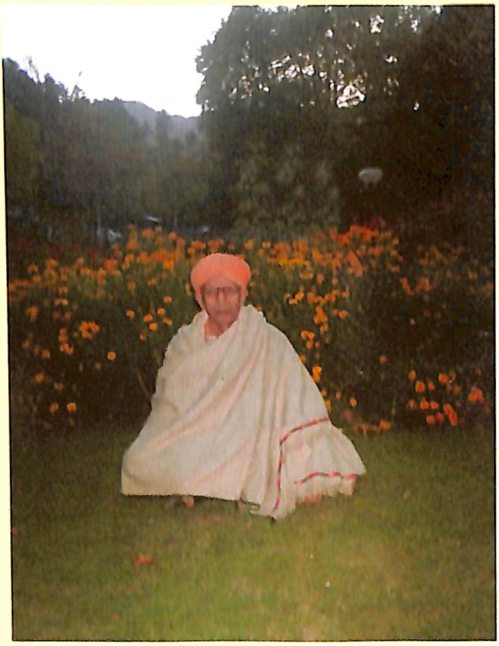

स्वामी प्रेमनाथ जी गोसोन्य गोंड़, कश्मीर 2007

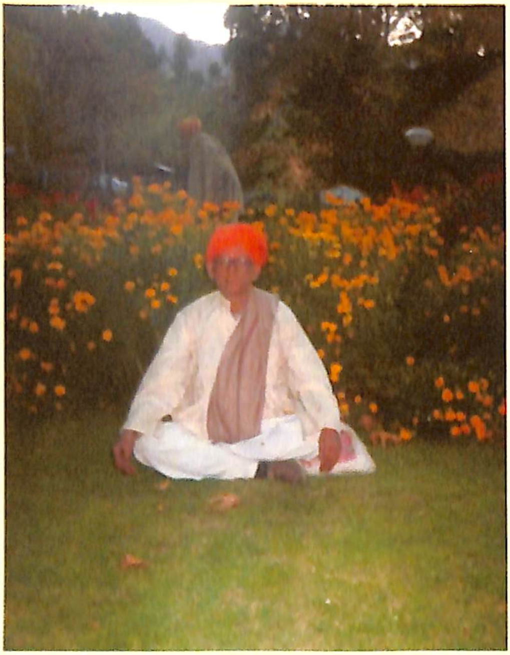

स्वामी पृथ्वीनाथ जी गोसोन्य गोंड़, कश्मीर 2007

मुद्रक : राधा प्रेस, कैलाश नगर दिल्ली-31 मो. 09811263221